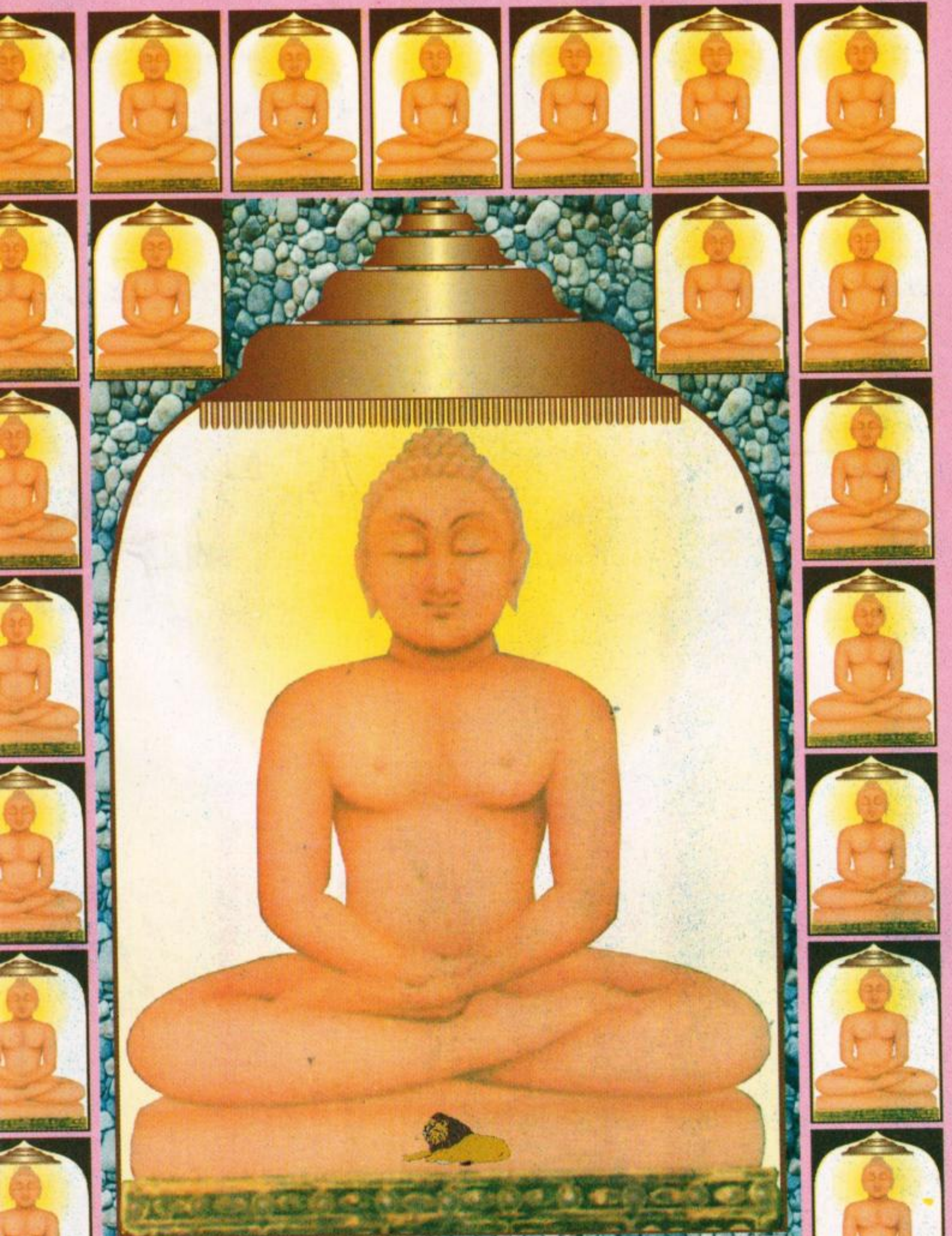

चौबीस तीर्थंकर विधान

–राजमल पवैया

प्रकाशकीय

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के माध्यम से कविवर पण्डित राजमलजी पवैया की नवीनतम कृति श्री चौबीस तीर्थंकर विधान का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

जिनेन्द्र भगवन्तों के गुणानुवाद द्वारा वीतराग भाव के पोषण हेतु पूजन-विधानों का आलम्बन लेने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। जिनेन्द्रदेव के गुणगान के प्रसंग में उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के प्रतिपादन की परम्परा का सूत्रपात आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभू स्तोत्र में किया जिसका निर्वाह उनके परवर्ती आचार्यों एवं विद्वानों ने भी किया है।

चौबीस तीर्थंकर हमारे आराध्य हैं। उनकी वंदना एवं उनके स्वरूप के प्रतिपादन की अनेक रचनायें उपलब्ध हैं। चौबीस तीर्थंकरों की भक्ति से प्रेरित होकर कविवर पण्डित राजमलजी पवैया ने इस विधान की रचना की है। प्रस्तुत विधान में प्रत्येक तीर्थंकर की अलग-अलग पूजन है। आशा है साधर्मी बन्धु लाभान्वित होंगे।

श्री राजमलजी पवैया सिद्धहस्त रचनाकार हैं उनके द्वारा शताधिक विधानों की रचना की गई है जो लगभग सभी प्रकाशित हैं। हमारे अनुरोध को स्वीकार कर उनने अल्प समय में ही इस विधान की रचना की है, इसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

प्रस्तुत कृति के प्रकाशन का दायित्व सदा की भाँति प्रकाशन विभाग के प्रभारी श्री अखिल बंसल ने सम्हाला है। नयनाभिराम आवरण एवं साफ-सुथरे प्रकाशन के लिए वे बधाई के पात्र हैं। पण्डित संजयकुमार शास्त्री, बड़ामलहरा तथा पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया द्वारा प्रूफरीडिंग का कार्य सम्पन्न किया गया है अतः हम उन्हें भी धन्यवाद देते हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन के माध्यम से आबाल गोपाल चौबीसभगवन्तों का स्वरूप समझकर उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर आत्मकल्याण करें यही मंगल भावना है।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

महामंत्री

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान

विषय-सूची

१.	मंगलाष्टक	१
२.	मंगल पंचक	२
३.	मंगलाचरण	४
४.	समुच्चय पूजन	६
५.	श्री ऋषभनाथ पूजन	१०
६.	श्री अजिनाथ पूजन	१५
७.	श्री संभवनाथ पूजन	२०
८.	श्री अभिनन्दननाथ पूजन	२५
९.	श्री सुमतिनाथ पूजन	३०
१०.	श्री पद्मप्रभ जिन पूजन	३५
११.	श्री सुपार्श्वनाथ पूजन	४०
१२.	श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन	४५
१३.	श्री पुष्पदंत जिन पूजन	५०
१४.	श्री शीतलनाथ पूजन	५४
१५.	श्री श्रेयांसनाथ पूजन	५९
१६.	श्री वासुपूज्य जिन पूजन	६४
१७.	श्री विमलनाथ पूजन	६९
१८.	श्री अनंतनाथ पूजन	७३
१९.	श्री धर्मनाथ पूजन	७८
२०.	श्री शान्तिनाथ पूजन	८३
२१.	श्री कुन्थुनाथ पूजन	८८
२२.	श्री अरनाथ पूजन	९३
२३.	श्री मल्लिनाथ पूजन	९८
२४.	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन	१०३
२५.	श्री नमिनाथ पूजन	१०८
२६.	श्री नेमिनाथ पूजन	११३
२७.	श्री पार्श्वनाथ पूजन	११८
२८.	श्री महावीर जिन पूजन	१२४

मंगलाष्टक

छंद - शार्दूलविक्रीड़ित

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रिमहिता सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधका :,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुटप्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वतपाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरुवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ।
धर्मःसूक्तिसूधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥

सर्पोहारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये,
ये चाष्टांग महानि-मित्तकुशला येऽष्टार्विधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥

कैलासे वृषभस्य निवृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणमपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरो कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्याशाखिषु तथा वक्षार रौप्याद्रिषु ।

इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरै,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥८॥

इत्थं श्री जिन मंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्पदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखात् ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धमार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपारहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

✧✧✧

मंगल पंचक

छंद-गीतिका

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकराः ।
सद्बोध-भानुविभा-विभाषितदिक्चया विदषांवराः ॥
निःसीमसौख्यसमूहमण्डितयोगखण्डितरतिवराः ।
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते श्री वीरनाथ जिनेश्वराः॥१॥

सद्ध्यानतीक्ष्ण-कृपाणधारा निहतकर्मकदम्बका ।
देवेन्द्रवृन्दनरेन्द्रवन्द्याः प्राप्त सुखनिकुरम्बकः ॥
योगीन्द्रयोगनिरूपणीयाः प्राप्तबोधकलापकः ।
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायका ॥२॥

आचारपंचकचरणचारणचुंचवः समताधराः
नानातपोभरहैतिहापितकर्मकाः सुखिताकराः
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतांवराः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते श्री सूरयोऽर्जितशंभराः ॥३॥

द्रव्यार्थ भेद विभिन्नश्रुतभरपूर्णतत्त्वनिभालिनो
दुर्योगयोगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणशालिनः

कर्त्तव्यदेशनतत्परा विज्ञान गौरव शालिनः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते गुरूदेवदीधितिमालानिः ॥४॥
संयमसमित्यावश्यका-परिहाणिगुप्तिविभूषिताः
पंचाक्षदान्तिसमुद्यताः समतासुधापरिभूषिताः
भूपृष्ठविष्टरसायिनो विविधर्द्धिवृन्द विभूषिताः
कुर्वन्तु मंगलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिताः ॥५॥

णमोकार मंत्र

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु
णमोअरिहंताणं णमोसिद्धाणं
णमोआयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच णमो यारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पणमंहवइ मंगलं ॥

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं केवलीपण्णत्तोधम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगोत्तमा अरिहंता लोगोत्तमा
सिद्धालोगोत्तमा साहू लोगोत्तमा
केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि ॐ नमोअर्हतोस्वाहा
अरिहंते शरणं पव्वज्ञामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्ञामी, साहू शरणं पव्वज्ञामि,
केवली पण्णत्तोधम्मो शरणं पव्वज्ञामि ॥

ॐ

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान

मंगलाचरण

(अनुष्टुप)

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी, मंगलं तीर्थंकरम् ।
मंगलं शुद्ध चैतन्यं, आत्मधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

(चामर)

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञान रूप मंगलम् ।
गणधरादि सर्व साधु ध्यान रूप मंगलम् ॥
जैन धर्म सार्व धर्म विश्व धर्म मंगलम् ।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम् ॥

(दोहा)

जयति पंचपरमेष्ठी, जिनप्रतिमा जिनधाम ।
जय जगदम्बे दिव्यध्वनि, श्री जिनधर्म प्रणाम ॥
पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

पीठिका

(चान्द्रायण)

वर्त्तमान जिन तीर्थंकर चौबीस को ।
नमन करूँ मैं विनय सहित जगदीश को ॥
रचूँ विधान महान भाव पूर्वक प्रभो ।
निज कल्याण हेतु पूजन करता विभो ॥
वृषभादिक श्री वीर जिनेश महान हैं ।
त्रिभुवन में सर्वोत्तम श्रेष्ठ प्रधान हैं ॥
ज्ञान भावना उर में भायी हे विभो ।
धर्म चक्र का किया प्रवर्त्तन हे प्रभो ॥

इस विधान का सर्वश्रेष्ठ फल जानिए।
इसका फल सम्यग्दर्शन उर आनिए।

(सोरठा)

चौबीसों तीर्थेश, भाव सहित वन्दूँ सदा।
होऊँ निर्ग्रंथेश, यही भावना है प्रभो ॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

श्री चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(गीतिका)

जय ऋषभदेव जिनेन्द्र जय जय, अजित प्रभु अभ्यंकरम्।
जय नाथ सम्भव भव विनाशक, जयतु अभिनन्दन परम् ॥१॥

जय सुमतिनाथ सुमति प्रदायक, पदमप्रभ प्रणतेश्वरम्।
जय जय सुपार्श्व स्वपर प्रकाशक, चन्द्रप्रभ चन्द्रेश्वरम् ॥२॥

जय पुष्पदन्त पवित्र पावन, जयति शीतल शीतलम्।
जयश्रेष्ठ श्री श्रेयांस प्रभुवर, वासुपूज्य सु निर्मलम् ॥३॥

जय अमल अविकल विमल प्रभु जय, जय अनन्त आनंदकम्।
जय धर्मनाथ स्वधर्मरवि जय, शान्ति जग कल्याणकम् ॥४॥

जय कुन्थुनाथ अनाथ रक्षक, अर सुनाथ अरिंजयम्।
जय मल्लि प्रभु हत दुर्नयम् जय, मुनिसुव्रत मृत्युंजयम् ॥५॥

जय मुक्तिदाता नमि जिनोत्तम, नेमि प्रभु लोकेश्वरम्।
जय पार्श्व विघ्नविनाशनम्, जय महावीर महेश्वरम् ॥६॥

जय पापपुण्य निरोधकम्, ज्ञानेश्वरम् क्षेमंकरम्।
जय महामंगल मूर्ति जय, चौबीस जिन तीर्थंकरम् ॥७॥

卐

श्री चौबीस तीर्थंकर विधान

समुच्चय पूजन

स्थापना

(ताटंक)

वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर, के चरणों में करूँ नमन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु की, सविनय करूँ नित्य पूजन॥

निज स्वभाव साधन के द्वारा, पाया निर्मल मुक्ति गगन।
सर्व सौख्य मंगल के दाता, परम पवित्र पूज्य भगवन।

मैं अनादि से दुखी जगत में, प्रभु मेरा उद्धार करो।
वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भवसमुद्र से पार करो॥

(दोहा)

वर्त्तमान तीर्थेश को, नित वन्दूँ धर ध्यान।
चौबीसी पूजन करूँ, करूँ आत्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(ताटंक)

रजत कटोरी में प्रासुक जल, ले प्रभु चरण चढ़ाऊँगा।
सम्यग्दर्शन पाऊँगा, नाचूँगा प्रभु गुण गाऊँगा॥
चौबीसों तीर्थंकर के चरणों, में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

स्वर्ण कटोरी में शुभ चंदन, ले प्रभु भेंट चढ़ाऊँगा।
सम्यग्ज्ञान ग्रहण कर हे प्रभु, नाचूंगा हर्षाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं नि.।

शुद्ध अखंडित उज्ज्वल अक्षत, हे प्रभु भेंट चढ़ाऊँगा।
सम्यक् चारित्र की महिमा पा, नाचूंगा हर्षाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय अक्षयपद - प्राप्तये अक्षतान् नि.।

महामनोहर सुमन सुगंधित, प्रभु के अग्र चढ़ाऊँगा।
रत्नत्रय की तरणी पाकर, नाचूंगा हर्षाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय कामबाण - विनाशनाय पुष्पं नि.।

परम पवित्र भाव के पावन, उत्तम सुचरु चढ़ाऊँगा।
अविरति हर संयम धारूंगा, नाचूंगा हर्षाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय क्षुधारोग - विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

जगमग जगमग ज्ञानदीप ले, हृदय प्रकाश सजाऊँगा।
श्रेणी चढ़ने का उपाय पा, नाचूंगा हर्षाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति मैं, शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय मोहान्धकार - विनाशनाय दीपं नि.।

शुचिमय धूप अनूप ध्यान की, निज उर में प्रकटाऊँगा।
घाति–अघाति कर्म की पीड़ा, हे स्वामी विघटाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति, मैं शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्म-विनाशनाय धूपं नि.।

उत्तम शुद्धभाव के अनुपम, फल अवश्य मैं पाऊँगा।
महामोक्ष फल का सेवन कर, परम सिद्ध बन जाऊँगा॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति, मैं शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. ।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढ़ा पदवी अनर्घ्य उर लाऊँगा।
अष्टमवसुधा पर निवासकर सिद्धचक्र निज पाऊँगा ॥
चौबीसों तीर्थंकर के, चरणों में शीष झुकाऊँगा।
निज स्वरूप से कर प्रतीति, मैं शुद्ध भावना भाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

हे चौबीस जिनेश, बार–बार वन्दन करूँ ।
निरखूँ निज आत्मेश, सकल कर्म मल को हरूँ ॥
आप कृपा से देव, निज ज्ञायक को जान लूँ।
निज शुद्धात्म सुदेव, मैं ही हूँ यह मान लूं ॥

(ताटंक)

वृषभ चिह्न लख ऋषभनाथ को, भाव सहित नित करूँ नमन।
गज लक्षण लख अजित जिनेश्वर, के चरणों में नित वंदन॥
अश्व चिह्न लख संभव जिनवर, के पद कमलों में वंदन।
मर्कट चिह्न देख चरणों में, अभिनंदन का अभिनंदन ॥

चकवा पद में सुमति जिनेश्वर, वन्दूँ पाऊँ ज्ञानगगन।
कमल चिह्न लख पद्म प्रभ को, वन्दूँ निज में रहूँ मगन॥
स्वस्तिक चिह्न सुपार्श्व नाथ को, वन्दूँ करूँ आत्मदर्शन।
चंद्र चिह्न चंदाप्रभ वन्दूँ, आत्मचंद्र निरखूँ भगवन॥
मगर चिह्न लख पुष्पदंत प्रभु, सुविधिनाथ उपनाम नमन।
कल्पवृक्ष शीतल जिनस्वामी, परम शान्त मुद्रा भगवन॥
गैंडा चिह्न चरण में लख, श्रेयांसनाथ प्रभु को वंदन।
महिष चिह्न लख वासुपूज्य को, विनय पूर्वक करूँ नमन॥
विमलनाथ पद शूकर चिह्न, देखकर सादर करूँ नमन।
सेही चिह्न अनंतनाथ पद, सविनय सादर प्रभु वंदन॥
वज्र चिह्न प्रभु धर्मनाथ पद, वन्दूँ पाऊँ धर्मगगन।
शान्तिनाथ मृगचिह्न मनोहर, परम शान्ति पाऊँ भगवन॥
कुन्थुनाथ अज चिह्न चरण में, वन्दूँ लूँ सम्यग्दर्शन।
मीन चिह्न अरनाथ जिनेश्वर, भेदज्ञान पाऊँ भगवन॥
कलश चिह्न लख मल्लिनाथ प्रभु, वन्दूँ लूँ संयम पावन।
कछवा चिह्न मुनिसुव्रत स्वामी, अविरति नाशूँ करूँ नमन॥
नमि जिनवर के चरण पखारूँ, लखकर नीलकमल लक्षण।
नेमिनाथ पद चिह्न शंख है, घाति-अघाति किए मर्दन॥
पार्श्वनाथ पद चिह्न सर्प लख, भव संकटहर्त्ता वंदन।
महावीर पद सिंह चिह्न लख, अंतिम तीर्थंकर वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

चौबीसों जिन पूजन कर निज को ही ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नमः

卐

श्री ऋषभनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

प्रथम स्वयंभू तीर्थंकर जिन, ऋषभ अनंत चतुष्ट्य रूप।
सम्यग्ज्ञान विभूति जिनेश्वर, स्वर्ग मोक्ष के कारणभूत।।
पृथ्वी तल के अंधकार को, क्षय करते चंद्रमा समान।
भव्य भूत आह्लाद प्रदायक, आप अबाधित तत्त्व महान।।
समुद्रान्त पृथ्वी रूपी, स्त्री को त्याग दिया तत्काल।
दीक्षा लेकर मुक्त हो गए, घाति-अघाति विनाश विशाल।।
रागादिक विकार से विरहित, कर्मकलंक विहीन महान।
नित्य निरंजन निर्मद निरुपम, निरावरण निर्मल निर्वाण।।

(दोहा)

जन्म अयोध्या नगर में, पावन परम महान।
अष्टापद कैलाश से, पाया पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(विजात)

बहार आयी स्वधर्म की जब से मोहनिद्रा से मैं भी जागा।
स्वभाव चिन्तन का नाम सुनते ही मोह मिथ्यात्व पूरा भागा ।।
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

स्वरस की वर्षा हुई गगन से तो मैंने झेली सजग स्वउर में।
विनाशकारी विभाव छोड़े स्वरूप निरखा स्वज्ञानपुर में ।।

ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

निजानुभव की ही शुद्ध नदियां भी भदभदाकर उमड़ रही हैं।
स्वध्यानवाली स्वभाववाली स्वभावनभ में घुमड़ रही हैं ॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि.।

निमिष में एकान्त क्षय हुआ है दिशा अनेकान्त की मिली है।
नहीं है अज्ञान भावना अब कली स्वभावी अभी खिली है ॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

मिली है आनंदघन की बस्ती जो मुक्तिरमणी का शुद्ध घर है।
अनंत गुण का समुद्र पाया जहाँ न कोई भी भाव पर है ॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

लगन लगी है निजात्मा की जो मेरा परमात्मा है पावन ।
विभाव जिसमें कहीं नहीं है न जिसमें कोई भी राग का कण॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

नहीं है पर्यायदृष्टि मेरी नहीं है कोई भी राग कारण ।
है द्रव्यदृष्टि सदा ही मेरी यही स्वसाधन यही है तारण ॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

स्वभाव परिणति है संग मेरे मुझे किसी का भी डर नहीं है।
मैं ध्रुव की धुन में सदा मगन हूँ तभी तो चहुँगति में घर नहीं है॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अनंत भव मेरे व्यर्थ बीते ये भव ही सार्थक हुआ है मेरा।
स्वज्ञान धारा ने मुझको तारा स्वभाव साधक हुआ है मेरा॥
सुगुरु ने आंजा है ज्ञान अंजन मुझे किसी का भी भय नहीं है।
है साम्यभावी स्वभाव मेरा यहाँ किसी की भी जय नहीं है॥
ऋषभ जिनेश्वर की पूजा करके करूँगा अपना सदैव ही हित।
त्रिकालवर्त्ती स्वभाव मेरा भरे हैं जिसमें स्वगुण अपरिमित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

दूज कृष्ण आषाढ़, मरुदेवी उर अवतरे।
गर्भ पूर्व छह मास, बरसे रत्न सुजन्म तक॥

ॐ ह्रीं श्री आषाढकृष्णद्वितियादिने गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जन्मे ऋषभ जिनेश, चैत्र कृष्ण नवमी दिवस।
नाभिराय गृह इन्द्र, गाते मंगल गान बहु॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवमीदिने जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ सुतप कल्याण चैत्र कृष्ण नवमी दिवस।
जय जय करते देव, लौकान्तिक सुर आन कर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवमीदिने तपकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ ज्ञान कल्याण, फागुन वदि एकादशी।
पाया केवलज्ञान कर्म घातिया नाश कर॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ मोक्ष कल्याण, माघ कृष्ण की चतुर्दशि।
पाया पद निर्वाण, सादि अनंतों काल को ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

आत्मतत्त्व का ज्ञान, नाथ आप से जानकर।
निज वैभव का भान, आप कृपा से हो गया ॥

(मानव)

चैतन्य चक्रवर्ती हूँ, क्यों भीख माँगने जाऊँ।
मैं तो जिनवर चरणाम्बुज, दिन-रात हृदय से ध्याऊँ॥
जिनवर में हैं अनंत गुण, मुझमें भी है अनंत गुण।
फिर क्यों लौकिक भिक्षा हित, मैं अपना शीष झुकाऊँ॥
तन धन वैभव कुटुम्ब सब, नश्वर दो दिन की छाया।
फिर क्यों छाया के पीछे, यह जीवन व्यर्थ गवाऊँ ॥
नारायण प्रतिनारायण, चक्री आदिक पद पाए।
ये सब पुदगल पर्यायें, इनमें ना और लुभाऊँ ॥
ये इन्द्रादिक सुर पद भी, हैं नश्वर साता दाता।
जड़ के पीछे निज शाश्वत, वैभव क्यों नाथ भुलाऊँ ॥
अब मुझे समझ आयी है, निर्ग्रंथ स्वपद है मेरा।
इसके बल से त्रिभुवन पर, मैं जय करके दिखलाऊँ ॥
निज आत्म प्रदेश अनंतों, गुण से मेरे भूषित हैं।
उनको प्रकटाने का ही, मैं यत्न सफल कर जाऊँ ॥
तीर्थंकर पद भी बाधक, शिवसुख में मैंने जाना।
अरहंत सिद्ध पद का ही श्रम करूँ सदा सुखपाऊँ ॥
चेतन होकर भी बनता, क्यों भीख माँग भिखमंगा।
अब तो निज विरद सभारूँ, निज गुणवैभव धन पाऊँ॥
तीर्थंकर आदि वृषभ का, उपदेश करूं हृदयगम।
मिथ्यात्व मोह विघटाऊँ, सम्यग्दर्शन प्रकटाऊँ ॥

भवसागर के अनंत दुख मैंने पाए अनगिनती ।
इस जड़ अनात्मा के संग अब और न भवदुख पाऊँ ॥
इस जड़ तन कारागृह का बंदी अनादि से ही हूँ ।
अपना स्वध्यान करके प्रभु इससे छुटकारा पाऊँ ॥
जड़ भीख कटोरे भर से मुझको क्या लेना देना ।
मैं स्वयं दान दाता हूँ क्यों भीख माँग कर खाऊँ॥
मैं तो केवलज्ञानी हूँ मुझमें सब ज्ञेय झलकते ।
निज ज्ञायक पद को तजकर क्यों पर को और रिझाऊँ॥
सौ–सौ रविशशि इन्द्रादिक आकर के मुझे मनाएँ ।
मैं नहीं किसी की मानूँ अपने में ही जम जाऊँ ॥
ध्रुवधाम आत्मा ही है जो नहीं त्रिलोक शिखर पर ।
निज गुणमय सिद्धशिला ध्रुव उस पर ही मैं थम जाऊँ ॥
शुद्धात्म तत्त्व ही मेरा है साधक साध्य सनातन ।
साधना इसी की करके शाश्वत ध्रुव वैभव पाऊँ ॥
अरहंत सिद्ध परमेष्ठी के पद चिह्नों पर चल कर ।
अरहंत सिद्ध बन जाऊँ सम्पूर्ण मोक्षसुख पाऊं ॥
कर्मों से मेरा कोई संबंध नहीं है स्वामी ।
कर्मों पर विजय प्राप्त कर मैं कर्म रहित हो जाऊं ॥
मैं नित्य निरंजन अविचल चेतन त्रिकालवर्त्ती हूँ ।
मैं चिन्मय चिद्घन अविकल चिच्चमत्कार दर्शाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरऋषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

ऋषभ नाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथजिनेन्द्राय नम :

卐

ॐ

श्री अजितनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

अजित अजेय शक्ति के अधिपति, अविनाशी आनंद स्वरूप।
लोकोत्तर माहात्म्य आपका, त्रिभुवन में विख्यात अनूप ॥
परम श्रेष्ठ मंगल निमित्ति प्रभु, अविकारी अविकल्प अरूप।
भव परिभ्रमण क्लेश के नाशक, नित्यानंदी नित्य स्वरूप॥
मेघ आवरण चीर सूर्य ज्यों, कमलों को देता आह्लाद।
दिव्य ध्वनि पति तुव प्रसाद से, रहता रंच न वाद विवाद ॥
जिसने अपने को जीता, आर्हन्त्य लक्ष्मी वह पाता।
आत्म स्वरूपाचरण त्रिकाली, परम सौख्य उर प्रकटाता ॥

(दोहा)

जन्म अयोध्या नगर में, सम्मेदाचल मोक्ष।
अजितनाथ को नमन है, मेरा सदा परोक्ष ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(ताटंक)

उत्तम सहज नीर के अनुपम, कलश भराऊँ शिवकारी।
त्रिविध रोग का नाश करूँ प्रभु, पाऊँ निज पद अविकारी ॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ, आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

उत्तम सहज भाव निज चंदन भव आतप का करता नाश।
ज्वर संसार सदा को हरता करता ज्ञान स्वरूप प्रकाश॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

उत्तम सहज भाव अक्षत ही निज अक्षय पद के दातार।
पुण्य-पाप आस्रव भावों को कर देते पल में संहार॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तायअक्षतान् नि.।

उत्तम सहज भाव पुष्पों की गंध परम सुखदायी है।
कामबाण अरिविध्वंसक है महाशील शिवदायी है॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

उत्तम सहज भाव के चरु ही तो अतृप्ति के नाशक हैं।
परम तृप्तिदायक समभावी उज्ज्वल रूप प्रकाशक हैं॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

उत्तम सहज भाव के दीपक मिथ्यातम के नाशक हैं।
मोहशत्रु संपूर्ण विनाशक लोकालोक प्रकाशक हैं॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

उत्तम सहज भाव धूप ही अष्टकर्म की नाशक है।
नित्य निरंजन शिवसुखदाता सिद्धस्वरूप विकासक है॥

अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

उत्तम सहज भाव के रसमय फल ही शिवसुखदायक हैं।
महामोक्षफल के दायक हैं पूर्ण स्वरूप विधायक हैं ॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

उत्तम सहज भाव के पावन अर्घ्य परम आनंदमयी।
पद अनर्घ्य अनमोल प्रदायक मंगलमय त्रैलोक्य जयी ॥
अजितनाथ स्वामी को वन्दूँ आत्मध्यान का करूँ प्रयत्न।
मुक्तिमार्ग पर चलूँ सदा ही पाऊँ गुण अनंत के रत्न ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

त्यागा विजय विमान, माँ विजया उर अवतरे।
कृष्ण अमावस ज्येष्ठ, इन्द्रादिक हर्षित हुए ॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठकृष्णअमावस्याया गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथ - जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जन्मे अजित जिनेश, माघ शुक्ल दशमी दिवस।
नृप जित शत्रु महान, दान दे रहे किमिच्छिक ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जागा उर वैराग्य, माघ शुक्ल दशमी दिवस।
वन को किया प्रयाण, धार महाव्रत मुनि हुए ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ ज्ञान कल्याण, पौष शुक्ल एकादशी।
जन गण मंगलदाय, प्रकटा केवलज्ञान उर ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया पद निर्वाण, चैत्र शुक्ल की पंचमी।
सिद्ध हुए भगवान, लघु पंचाक्षर काल में ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

अजित अजित जिनेन्द्र, महामोक्ष मंगल करो।
मैं आकुल आत्मेन्द्र, मेरा भवसंकट हरो ॥
प्रश्न यही है नाथ, मेरा अपने आप से।
है उपयोग महान फिर भी पूछूँ कौन हो ॥

(गीतिका)

यह बताओ चेतना पति तुम हमारे कौन हो।
ज्ञान दर्शनमयी हो आनंदमय शिव कौन हो ॥
उपयोग है लक्षण तुम्हारा गुण अनंतानंत मय।
शाश्वत हो ध्रौव्य हो ज्ञायक स्वभावी कौन हो ॥

विभावी भावों का रस अणुभर नहीं है पास में।
स्वभावी भावों का रस आपूर्ण तुममें कौन हो ॥
निजंतर सिद्धत्व का पर्वत अचल निष्कंप है।
सिद्धपुर सम्राट हो तुम मुक्तिपति हो कौन हो ॥

नाम जपते हैं तुम्हारा ऋषीश्वर गणधर हमेश।
फिर भी तुम अनुराग से हो दूर बोलो कौन हो ॥
अवक्तव्य स्वरूप के तुम धनी त्रिभुवन पति महान।
चिदानंदी चित्स्वभावी चिन्मयी तुम कौन हो ॥

स्वपरिणति अति सूक्ष्मता से पास रहती है सदा।
तन्मयी जीवन तुम्हारा अरूपी तुम कौन हो ॥
विभावों की पवन तुमको छू नहीं सकती कभी।
स्वभावी आनंदपति हो ध्यान विरहित कौन हो ॥

ध्यान ध्याता ध्येय का न विकल्प है उर में कहीं।
निजानंदी रसास्वादी ज्ञेय ज्ञाता कौन हो ॥
नय रहित हो भेद विरहित पूर्णतः निरपेक्ष हो।
बोलते बिलकुल नहीं तो बताओ क्यों मौन हो ॥

अनिन्द्रिय हो अतीन्द्रिय सुख के समुद्र महान हो।
वर्गणाओं से रहित अब तो बताओ कौन हो ॥
अरहंत हो या सिद्ध हो तुम शुद्ध बुद्ध प्रबुद्ध हो।
आप हमको हे अजित प्रभु सच बताओ कौन हो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअजितनाथ जिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

अजितनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमः

卐

ॐ

श्री संभवनाथ पूजन

स्थापना

(ताटंक)

भव्यजनों को मुक्तिप्रदाता सम्भवनाथ सौख्य सागर।
सांसारिक भोगों का तृष्णा रूपी रोग लिया सब हर॥
ज्यों पीड़ित प्राणी की पीड़ा निस्पृह वैद्य शान्त करता।
वह प्रतिफल की इच्छा से विरहित हो दुख प्रशान्त करता॥
अहंकार ममकार क्रिया से पीड़ित जन्ममृत्यु दूषित।
प्राणी भी तुव शरण प्राप्त कर होते शिवसुख से भूषित॥
परम शान्ति उत्पादक संभवनाथ तीसरे तीर्थंकर।
अव्याबाधी सुख अनंत उत्कृट प्रगट पाया जिनवर॥

(दोहा)

श्रावस्ती है जन्म भू, मोक्ष शिखर सम्मेद।
संभव जिन को नमन, कर हो जाऊँ निर्वेद॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चौपाई)

भवदुख नाशक नीर चढ़ाऊँ।
संयम की महिमा प्रभु पाऊँ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

मलजय चंदन भेंट चढ़ाऊँ।
जिन भावना सदा ही भाऊँ।

संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनायचंदनं नि.।

अक्षय ज्ञान भाव उर लाऊँ।
अक्षय पद अचिन्त्य निज पाऊँ ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

विविध भाव मय पुष्प चढ़ाऊँ।
काम नाश हित शिवपथ पाऊँ ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

भव रसमय नैवेद्य हटाऊँ।
अनुभव रस नैवेद्य बनाऊँ ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

जड़ दीपक प्रकाश करता है।
ज्ञानदीप भवभ्रम हरता है ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

धूप ध्यान मय कैसे पाऊँ।
अब तो अष्टकर्म विनशाऊँ ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

जड़ फल कब तक तुम्हें चढ़ाऊँ।
महामोक्ष फल कब प्रभु पाऊँ ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्रायमहामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अर्घ्य बनाऊँ ज्ञानभाव के।
पद अनर्घ्य पाऊँ स्वभाव के ॥
संभव जिन का ध्यान करूँ मैं।
शिवसुख संभव सत्य करूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, हुआ गर्भ कल्याण।
मात सुसेना हर्ष से, पुलकित हुई महान ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाअष्टम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे श्री भगवान।
पितु जितारि नंदन हुए, हर्षित महा महान ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

मगसिर शुक्ला पूर्णिमा, वन को किया प्रयाण।
राज्यपाट सब त्याग कर, पाया संयम ध्यान ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लापूर्णिमायां तपकल्याणक प्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कार्तिक कृष्णा चतुर्थी, पाया केवलज्ञान।
दिव्यध्वनि द्वारा किया, भव्यों का कल्याण ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यामज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

चैत्र शुक्ल की षष्टमी, पाया पद निर्वाण।
कर्म अष्ट सब नष्ट कर, हुए सिद्ध भगवान ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ट्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

संभव जिन तीर्थेश, भव की बाधाएँ हरो।
पाऊँ ज्ञान विशेष, मोक्षसौख्य दे दो प्रभो ॥

(वीरछंद)

अब मिथ्यात्व गृहीत नाशकर अगृहीत भी करूँ विनाश।
अगृहीत को तजा न अब तक अतः न टूटा भवदुख पाश ॥
यह मिथ्यात्व मुख्य बंध का कारण है जिनवर उपदेश।
नहीं अकिंचित्कर अणुभर भी बंधों का कारण बंधेश ॥

अरहंताणं जपते-जपते जीवन बीत गया मेरा।
आयु कलश भी धीरे-धीरे पूरा रीत गया मेरा ॥
किन्तु आज तक आत्मज्ञान क्यों मिला न अबतक बतलाओ।
आत्मज्ञान पाने की विधि अब मुझको हे प्रभु सिखलाओ॥

माया शल्य विनाशूँ स्वामी ऋजुता मेरे मन भाए।
यह स्वभाव निश्छल मेरा प्रभु परम शान्ति उर में लाए ॥
मिथ्याशल्य विनाशूँ स्वामी भ्रम अज्ञानतिमिर हरकर।
ज्ञान भावना सम्यक् भाऊँ परम ज्ञान आभा उर भर ॥

शल्य निदान विनाशूँ स्वामी भवसुख वांछा अब दूँ त्याग।
इन्द्रादिक सुख या चक्री सुख की आकांक्षा पूरी आग ॥
निःशंकादिक समकित के वसुदोष नष्ट कर दूं तत्काल।
निर्मल सम्यग्दर्शन के धन से हो जाऊँ मालामाल ॥

अष्टमदों से रहित बनूँ मैं पाऊँ विनयभाव शिव मित्र।
षट् अनायतन त्यागूँ स्वामी विविध भाँति के चित्र-विचित्र॥
ये पच्चीस दोष समकित के चल-मल अरु अगाढ़ कर नाश।
आत्मतत्व की श्रद्धापूर्वक स्वामी निज में करूँ निवास॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसंभवनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

संभव जिन की पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले उनको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय नम:

卐

करलो जिनवर की पूजन

करलो जिनवर की पूजन, आई पावन घड़ी।
आई पावन घड़ी मन भावन घड़ी॥१॥
दुर्लभ यह मानव तन पाकर, कर लो जिन गुणगान।
गुण अनन्त सिद्धों का सुमिरण, करके बनो महान॥ करलो.॥२॥
ज्ञानावरण, दर्शनावरणी, मोहनीय अंतराय।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, आठों कर्म नशाय॥ करलो.॥३॥
धन्य धन्य सिद्धों की महिमा, नाश किया संसार।
निज स्वभाव से शिवपद पाया, अनुपम अगम अपार॥करलो॥४॥
रत्नत्रय की तरणी चढ़कर चलो मोक्ष के द्वार।
शुद्धातम का ध्यान लगाओ हो जाओ भवपार॥ करलो.॥६॥

卐

ॐ

श्री अभिनंदननाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

अंतरंग बहिरंग लक्ष्मी के स्वामी अभिनंदननाथ।
जीवादिक सातों तत्त्वों के ज्ञान प्रदाता श्रेष्ठ सुनाथ॥
विषयलंपटी विषयासक्ति छोड़कर जब करता तुव ध्यान।
विषयेच्छाओं से निवृत्त हो कर लेता अपना कल्याण॥
तुव चरणों की कृपा प्राप्त कर सुख प्रकृष्ट को पाता है।
संतापित जीवों का सब संताप नष्ट हो जाता है॥
परम कारुणिक जग उपकारक समझाते परमार्थ महान।
जो निज तत्त्व यथार्थ समझता पा लेता है पद निर्वाण॥

(दोहा)

जन्म अयोध्या नगर है, मोक्ष शिखर सम्मेद।
अभिनंदन की कृपा से, पाऊं स्वपद अभेद॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चौपइ आँचलीबद्ध)

भवसमुद्र जल किया विनाश।
ज्ञानभाव का किया प्रकाश॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो।
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भववर्धक चंदन दुखरूप।
शुद्धभाव चंदन सुखरूप॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षत भाव ज्ञान के धाम।
अक्षय पद देते अविराम॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

भाव सुमन शिवमंगल कार।
कामशत्रु करते संहार॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

अनुभव रस चरु तृप्ति प्रदाय।
महाशान्ति सागर शिवदाय॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यं नि.।

ज्ञानभाव दीपक की ज्योत।
स्व–पर प्रकाशक पद उद्योत॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥

जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण ॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

ज्ञानभाव की धूप अनूप।
अष्टकर्म नाशक चिद्रूप ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण ॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

ज्ञानभावना फल शिवरूप।
महामोक्षफल परम अनूप ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण ॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

ज्ञानभाव के अर्घ्य प्रधान।
पद अनर्घ्य निज पूज्य महान ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
जय अभिनंदन प्रभो महान।
करो हमारा भी कल्याण ॥
महाप्रभु हो जय जय नाथ परम विभु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

छठ वैशाख सुदी दिवस, त्यागा विजय विमान।
सिद्धार्था उर अवतरे, अभिनन्दन भगवान ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्तये श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की द्वादशी, जन्मे श्री भगवान।
नृपति स्वयंवर गृह हुए, उत्तम मंगलगान॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की द्वादशी, पाया तप कल्याण।
लौकान्तिक सुर गा रहे, धन्य धन्य भगवान॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष शुक्ल की चतुर्दशि, पाया केवलज्ञान।
समवशरण रचना हुई, हरषे इन्द्र महान॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दशयां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

छठी शुक्ल वैशाख की, प्रकटा मोक्ष महान।
शेष अघाति विनाश कर, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ट्याम् मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

अभिनंदन भगवान, सविनय अभिनंदन करूँ।
शुद्धात्मा का ज्ञान, पाकर भवबंधन हरूँ॥

वीर छंद

बिना पलक झपकाए दिखता अन्तहीन निर्मल आकाश।
अपलक दृष्टि स्वभाव भाव पर हो तो दिखता ज्ञानाकाश॥
नहीं वासना दमन करो तुम उसको जड़ से कर दो भ्रष्ट।
जो स्वभाव के बाहर हो वह भाव पूर्णतः कर दो नष्ट॥
गुण अनंत का सागर उर में उसके तट पर करो निवास।
फिर उसमें अवगाहन करके पाओ ध्रुव आनंद सुवास॥
ज्ञान गगन तो निर्द्वंद्वी है उसमें कहीं न पर का वास।
नित्य निरंजन परमानंदी त्रैकालिक ध्रुव आत्माकाश॥
शुद्ध ध्यान की मूलभित्ति है अपने ही भीतर रहना।
निज स्वभाव सागर की सलिल तरंगों के संग-संग बहना॥

सम्यग्दर्शन अंगीकृत कर मोक्षमार्ग पर करो प्रयाण।
कर्मों की सत्ता उदीरणा उदय आदि कर दो अवसान॥
स्थिति पूरी कर कर्मों के फल देने का नाम उदय।
स्थिति पूरी किए बिना फल देना उदीरणा निर्भय॥
आत्मभ्रान्ति की निवृत्ति कर्म की क्षय कहलाती है जानो।
अगर कर्म का क्षय न उदय हो तो सत्ता में है मानो॥
कर्मों की स्थिति शक्ति का बढ़ जाना है उत्कर्षण।
कर्मों की स्थिति शक्ति का घट जाना है अपकर्षण॥
एक भेद से दूजे में हो जाना है संक्रमण सदा।
कर्म शक्ति का वर्त्तमान में दब जाना उपशम सुखदा॥
सर्वघाति का उदयाभावी क्षय अरु उसी काल उपशम।
देश घाति का उदय सदा ही कहलाता है क्षयोपशम॥
कर्मों को सर्वथा क्षय करूँ कर्म बंध सब नाश करूँ।
प्रकृति प्रदेश स्थिति बंध अनुभाग बंध का त्रास हरूँ॥
कैसे क्यों क्या करूँ बताओ कैसे अपना ध्यान करूँ।
कैसे निज वैभव को पाऊँ कैसे निज कल्याण करूँ॥
जो निकृष्ट है उसे जानने की इच्छा ही जगती है।
जो प्रकृष्ट है उसे जानने की इच्छा तो भगती है॥
भवइच्छाएं त्यागूँ हे प्रभु मोक्षेच्छा कर दो साकार।
हे अभिनंदननाथ दयाकर मेरा भी कर दो उद्धार॥
मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्राचरण नष्ट कर दूँ इस बार।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राचरण शुद्ध मेरा आधार॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

अभिनंदन प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः

卐

ॐ

श्री सुमतिनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

सुमति जिनोत्तम श्रेष्ठ सुमति के, दाता दर्शन ज्ञान स्वरूप।
नित्यानित्य तथा अस्तित्व, नास्तित्व है वस्तु स्वरूप ॥
द्रव्यदृष्टि से नित्य तथा, पर्यायदृष्टि से अनित्यरुप ।
हैं संसार पदार्थ सर्व ही, द्रव्य और पर्याय स्वरूप ॥
कर्त्ता कर्म करण आदिक, कारण की तत्त्व सिद्धि करते ।
युक्ति युक्त वचनों के द्वारा, सबकी ज्ञान वृद्धि करते ॥
बाह्यभ्यांतर अनंत लक्ष्मी, युक्त आपका आत्म अनूप ।
भेदज्ञान की विधि बतलाने, वाले केवलज्ञान स्वरुप ॥

(दोहा)

जन्म अयोध्या जानिए, सम्मेदाचल मोक्ष ।
ज्ञानसिन्धु प्रभु आपका, है प्रत्यक्ष परोक्ष ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(गीतिका)

नीर यह संसार का कैसे सुखाऊँ हे प्रभो ।
मुक्तिपथ पर निज चरण कैसे बढ़ाऊँ हे विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान ।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

ताप तन नाशक मलय चंदन बहुत पाया प्रभो ।
ज्ञानचंदन परम शीतल तो नहीं भाया विभो ॥

सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनायचंदनं नि.।

शालि धवलोज्ज्वल बहुत सारे चढ़ाए हैं प्रभो।
स्वपद अक्षय प्राप्ति हित भव भ्रम बढ़ाए हैं विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

पुष्प नंदनवन मनोहर सुगंधित लाया प्रभो।
ज्ञानपुष्प न आज तक मैंने कभी पाया विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनायपुष्पं नि.।

सदा षट्रसमयी भोजन भी बनाए हैं प्रभो।
तृप्ति कर निज भावना के चरु न पाए हैं विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यं नि.।

ज्ञानभावी दीप के स्वप्रकाश से मैं दूर हूँ।
मोह की अंगड़ाइयों में नाथ अब तक चूर हूँ ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निं.।

आत्मध्यानी धूप के दर्शन नहीं पाए प्रभो।
अष्टकर्म विनाश के अवसर नहीं पाए विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

साम्य भावी सुतरुके फल कब मिलेंगे हे प्रभो।
शुष्क मन में ज्ञान अंकुर कब खिलेंगें हे विभो ॥
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

गुण अनंतानंत का ही अर्घ्य जब होगा प्रभो।
पद अनर्घ्य स्वतः मिलेगा पूर्ण सुख होगा विभो ॥
वीतरागी ध्यान मुद्रा अति विमल उर भा गई।
विभावों की श्रृंखला स्वयमेव क्षय को पा गई ॥
मूर्त्ति मन भावन तुम्हारी सहज हृदय सुहा गई।
दिव्य ध्वनि पावन तुम्हारी अंतरंग समा गई।
सुमतिनाथ जिनेन्द्र चरणाम्बुज सकल जग में प्रधान।
एक पल में हो गए प्रभु त्रिलोकाग्र विराजमान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

स्वर्ण जयंत विमान, त्याग सुमति जिनेश ने।
श्रावण शुक्ला दूज, माँ मंगला उर अवतरे ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायाम् गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

मेघ नृपति गृह जन्म, चैत्र शुक्ल एकादशम।
सुरगिरि रच अभिषेक, इन्द्र सभी हर्षित हुए ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल एकादशयाम् जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

शुक्ल नवमि वैशाख, हो गए पंच महाव्रती।
तरु प्रियंगुतल त्याग, वस्त्राभूषण मुनि हुए ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्याम् तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया केवल ज्ञान चैत्र शुक्ल एकादशी।
समवशरण में इन्द्र, सुर सब सुनते दिव्य ध्वनि॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लएकादश्याम् ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया पद निर्वाण, चैत्र शुक्ल एकादशी।
अविचल कूट महान, सम्मेदाचल शीष से॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल एकादश्यां मोक्ष मंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

सुमति जिनेश महान भाव सहित वंदन करूँ।
पाऊं मोक्ष महान कर्मो के बंधन हरूँ॥

(मत्तसवैया)

मैं दुखी अनात्म ज्ञान से हूँ निज आत्मज्ञान को भूला हूँ।
संगति अनात्मा की करके पर के झूले में झूला हूँ॥
आनंद प्राप्ति की कला ज्ञान अब तो उपयोग करूँ स्वामी।
अपने भीतर अनंत गुण रस उसका ही भोग करूँ स्वामी॥
है मनुष्यत्व ही मुक्ति प्राप्ति के उद्यम का आधार श्रेष्ठ।
जो मुक्ति प्राप्त उद्यम विहीन उसकी जीवन गति महा नेष्ठ॥
कर्तव्य निष्ठ होकर स्वामी मैं निज स्वभाव को ही जानूँ।
निज वस्तु निष्ठ विज्ञान समझ अपने स्वरूप को पहचानूँ॥
उपशम भावों से रहा दूर मैं मोह प्रभंजन संग उड़ कर।
अपने से दूर रहा सदैव अपनी निज परिणति से कुढ़कर॥
दशलक्षण रत्नत्रय स्वभाव मैंने न कभी भी प्रभु जाना।
सोलहकारण भावना भाव भी मैंने कभी न पहचाना॥
पाँचों परमेष्ठी प्रभुओं का ऊपर-ऊपर ही जाप किया।
देखा निज परमेष्ठी न कभी इसलिए सदा संताप लिया॥
चारित्रनाम तो सुना किन्तु उर में ना सम्यग्ज्ञान लिया।
रत्नत्रय निधि पाने को भी प्रभु निज से परिचय नहीं किया॥

अवसर पाया चूका सदैव, निज का न कभी श्रद्धान किया।
संसार महादुख सागर में, पर भावों का ही साथ लिया॥
मेरे प्रदेश तो हैं असंख्य, जिन में अनंत गुण की सुवास।
मैं दर्शन ज्ञानमयी चेतन, मेरा तो निज में ही निवास॥
त्रैकालिक मोक्षस्वरुपी हूँ, ध्रुवधामी हूँ शिव सौख्य पास।
रागादि भाव भी नहीं कहीं, मार्गणा आदि का नहीं त्रास॥
मैं नित्य निरंजन चेतन हूँ, कर्मों का द्वंद्व न किया नाश।
जाज्वल्यमान परिपूर्ण शुद्ध मुझमें, ध्रुव ज्योतिमयी प्रकाश॥
सन्ध्या सिन्दूर लुटाने को, आतुर है चेतन की छवि पर।
देखो प्रभात भी नाच रहा, न्योछावर है चेतन छवि पर॥
चंद्रिका समर्पित है इस पर, चन्द्रमा गीत यश के गाकर।
सूरज की किरणें अर्पित हैं, गोदी में लेने को आतुर॥
रंगोली रचतीं हैं शचियां, इन्द्रादिक नतमस्तक सत्वर।
निज मुक्तिवधू भी पुलकित है, चेतन जैसे पति को पाकर॥
दुन्दुभियां गूँज रही नभ में, हर्षायमान यह जग नश्वर।
अपनी-अपनी मर्यादा में सब, नाच उठे धरती अंबर॥
जड़ समवशरण भी विघट गया, जयनाद हुआ त्रैलोक्य शिखर।
शिवपुर के तोरण द्वारों पर, गुञ्जित हो उठे चेतना स्वर।
मैं भी ऐसा अवसर पाऊं, भवदुख से मैं घबराया हूँ।
हे सुमतिनाथ तीर्थंकर प्रभु, इसलिए शरण में आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुमतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

सुमति जिनेश्वर पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र -ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम:

卐

ॐ

श्री पदमप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

विकसित करके ज्यों कमलों पर, सूर्य किरण हो रही विराज।
त्यों ही भव्य कमल मन विकसित, करते पदमप्रभु जिनराज॥
अंतरंग लक्ष्मी से आलिंगित, स्वभाव सुख में तल्लीन।
हितोपदेशी भव भयहर्त्ता, केवलज्ञान महान प्रवीण॥
पद्मराग मणि ज्यों पर्वत की, प्रभा पार्श्व करती आलिप्त।
उसी भांति इस समवशरण को, प्रभा युक्त कर हुए अलिप्त॥
पाँच सहस्र धनुष ऊपर, विहार करते जिनवर भगवान।
पंद्रह-पंद्रह स्वर्ण कमल दल, पंद्रह पंक्ति रचें सुरआन॥

(दोहा)

जन्म नगर कौशाम्बी, सम्मेदाचल मुक्त।
स्वगुण अनंतानंत से, आप हो गए युक्त॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पद्मप्रभु जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पद्मप्रभुजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पद्मप्रभुजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(समान सवैया)

जल भवाग्नि में झुलस गया हूँ, अब तो शीतल औषधि लाऊँ।
आत्म धरातल सूख गया है, अब तो समकित जल बरसाऊँ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भवसमुद्र का पार प्राप्त करने की विधि मुझको सिखलाओ।
अब तो मुझको अक्षय पद दो अजरामर अमरत्व पिलाओ ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनायचंदनं नि.।

भवसमुद्र का पार प्राप्त करने की विधि मुझको सिखलाओ।
अब तो मुझको अक्षय पद दो अजरामर अमरत्व पिलाओ ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

मैं कामाग्नि भाव से पीड़ित शील भाव से मुझे सजाओ।
अब तो महाशील गुण दो प्रभु हे स्वामी निष्काम बनाओ ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

मैं क्षुधाग्नि से बहुत दुखी हूँ तृप्त स्वभाव मुझे बतलाओ।
अब तो ज्ञान भाव चरु देकर यह मेरी जठराग्नि बुझाओ ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

है अज्ञान अग्नि ज्वालामय मिथ्यामोह तुरंत हटाओ।
ज्ञान भाव सागर जल द्वारा इसकी भीषण ज्वाल बुझाओ ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

इस कर्माग्नि भयंकर में जल भ्रमा चतुर्गति मुझे बचाओ।
अब तो अष्टकर्म ज्वाला को शुक्लध्यान दे पूर्ण मिटाओ ॥

पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.

महामोक्ष सुख से वंचित मैं मुझे मोक्ष का मार्ग बताओ।
अब तो महामोक्ष फल देकर सिद्ध स्वपद पर ही बिठलाओ॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

पद अनर्घ्य निज सर्वोत्तम जो शिवसुखमय है मुझे दिखाओ।
मुक्तिपंथ पर मुझको लाकर अब तो शिवपुर में पहुंचाओ॥
तुव आज्ञा को शिरोधार्य कर यदि शिवपथ पर आ जाऊंगा।
कृतकृत्य तो होऊँगा ही सिद्धशिला सुख भी पाऊंगा॥
पद्मप्रभ के चरण पूजकर, आत्मज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
आत्मध्यान की प्रचुर शक्ति पा, भवसागर सम्पूर्ण सुखाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

माघ कृष्ण षष्ठी दिवस, हुआ गर्भ कल्याण।
मात सुसीमा हर्ष से, प्रमुदित हुई महान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्टेदिने गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, जन्मे पद्म जिनेश।
धरणराज हर्षित हुए, पुलकित हुए सुरेश॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, दीक्षा दिवस प्रधान।
लौकान्तिक सुर कर रहे धन्य धन्य जयगान॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा प्रगटा केवल ज्ञान।
घाति नाश पाया सहज पद अरहंत महान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

फागुन कृष्णा चतुर्थी, मोहन कूट प्रसिद्ध।
सम्मेदाचल शीर्ष से, नाथ हो गए सिद्ध॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्याम् निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

पद्मप्रभ जिनराज, मैं विनती सादर करूँ।
निज की मति दो नाथ, मैं भव के संकट हरूँ॥

(वीरछंद)

मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात।
ज्ञानबीन तो सुनन न देवत अवगुण करत बहुत उत्पात॥

पहिले पहर स्वर्ग सुख देवें दूजे पहर मनुज भव दुख।
तीजे पहर तिर्यंच बनावें चौथे पहर नरक भव दुख॥
कोई न मार्ग हमें बतलावे देखन देत न ज्ञान प्रभात।
मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात॥

आवरणीय कर्म ने घेरा मारग कछु भी सूझत नाँय।
बुद्धिमयी विपरीत हमारी अपनो हित भी बूझत नाय॥
दुर्गुण ढोल मजीरा बाजें पापभाव नाचें दिन-रात।
मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात॥

कबहुँ पुण्य की बात सुन लई तो मेरो जियरा हरषाय।
पुण्यभाव जब उर में जागें तो ये पापभाव रिझियांय॥
मैं का करूँ बताओ प्रभु जी नरभव यों ही बीतो जात।
मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात॥

पुण्य संजोग मिले श्री सद्गुरु मोकूँ शिवपथ दिया बताय ।
भेदज्ञान कर समकित पालो जो निज अनुभव रस बरसाय॥
आज सुनी जिनआगम कथनी पायो मैंने ज्ञान प्रभात ।
मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात ॥

अब मैंने पद्मप्रभ जिन के दर्शन पाये अति सुखदाय ।
निज दर्शन कर शिवपथ पायो मोक्ष प्राप्ति को श्रेष्ठ उपाय॥
निश्चित सिद्ध स्वपद पाऊँगा घाति-अघाति कर्म वसु घात।
मोह बाँसुरी बाजत दुखमय राग मृदंग करत उत्पात ॥

शुक्लध्यान में भस्म करूँगा इन कर्मों के झंझावात ।
शिवमय तरुवर पात पुष्प कलिका फल पाऊँगा हे तात ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

पद्मनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः ।

卐

पद्म प्रभु हरो मेरी पीर।
राग द्वेष विनष्ट कर दो देहु समकित नीर॥
लीन विषय कषाय होकर सही जग की पीर।
कर्मफल भोगत अकेलो कोऊ नांहि सीर॥
तत्व चिन्तन बिना पायी चार गति की भीर।
शुद्ध बुद्ध स्वरूप विसर्‌यो भूल आतम हीर॥

ॐ

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

परम अपरिमिति ऐश्वर्य के धारक श्री सुपार्श्व भगवान ।
भव परिभ्रमण विनाशक स्वामी लोकालोकी विशिष्ट ज्ञान॥
शारीरिक मानसिक ताप को पूर्ण शान्त कर देते आप ।
दुर्वीक्षण यंत्रों से भी देखो तो कहीं न भव संताप ॥
यह अनात्म अनुराग उपार्जित करता दुख ही की लड़ियाँ ।
स्व-पर विवेक जाग्रत हो तो आती निज अनुभव घड़ियाँ ॥
जन्म-मरण से छुटकारे बिन होता कभी नहीं निर्वाण ।
दुखिया प्राणी ही अज्ञानी आप कृपा करता निज ज्ञान ॥

(दोहा)

जन्म नगर वाराणसी, श्री सुपार्श्व भगवान ।
सम्मेदाचल शैल से, पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(दिग्वधू)

निश्चय समकित के बिन आत्मानुभूति कैसी ।
आत्मानुभूति के बिन समकित की निधि कैसी ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

सम्यग्दर्शन के बिन उर सम्यग्ज्ञान नहीं ।
निज पर विवेक के बिन निज पर का भान नहीं ॥

हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

निज भेदज्ञान के बिन चौथा गुणथान नहीं ।
जप तप व्रत संयम का भी सम्यक् भान नहीं ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

स्वात्मानुभूति ही तो जिनधर्म श्रेष्ठ पावन ।
सम्पूर्ण शील सागर अन्तर्मन मन भावन ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

परधर्म आत्मा का निजधर्म नहीं होता ।
निज धर्म आत्मा का पर धर्म नहीं होता ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

समकित पाना है तो तुम भेदज्ञान कर लो ।
उर स्व-पर विवेक जगा निज आत्मभान कर लो॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

आगम अभ्यास करो स्वाध्याय नित्य द्वारा ।
तत्त्वों का निर्णय हो ज्ञानाभ्यास द्वारा ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

निज सन्मुख होते ही मिथ्यात्व नष्ट होता ।
मिथ्यात्व नष्ट हो तो सम्यक्त्व प्रकट होता ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

सम्यक्त्व प्रगट हो तो स्वात्मानुभूति होती ।
रत्नत्रय की निज निधि स्वयमेव निकट होती ॥
ज्ञानाब्धि लोल लहरें जब उर में आती हैं ।
कैवल्य प्रभाएँ भी आकर मुसकाती हैं ॥
हे जिन सुपार्श्व स्वामी तुमको सादर वन्दन ।
निज आत्मज्ञान द्वारा काटूँ भव के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

माँ पृथ्वी उर मध्य, श्री सुपार्श्व प्रभु अवतरे ।
हुआ गर्भ कल्याण, भादव शुक्ला षष्टमी ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ट्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सुप्रतिष्ठ नृपराज, वाराणसी प्रसिद्ध के ।
जन्में त्रिभुवन नाथ, ज्येष्ठ शुक्ल की द्वादशी ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया तप कल्याण, ज्येष्ठ शुक्ल की द्वादशी ।
राज्यपाट सब त्याग, निर्ग्रंथेश सुमुनि हुए ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ ज्ञान कल्याण, फागुन कृष्णा सप्तमी ।
दिव्यध्वनि के हेतु, समवशरण रचना हुई ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्याम् ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया मोक्ष महान, षष्ठी फागुन कृष्ण को।
कूट प्रभास प्रधान, सम्मेदाचल सुगिरि से ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्श्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

श्री सुपार्श्व जिनदेव, चरणाम्बुज वंदन करूँ।
ज्ञान करूँ स्वयमेव, चहुँगति के क्रन्दन हरूँ ॥

(छंद -हे दीन बंधू श्री पति करुणा निधान जी)

अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए।
अब न कभी आत्मा को गोता दीजिए ॥
बहुत दुख उठाए सदा तेरे आत्म देव ने।
कभी न सुख उठाया तेरे आत्म देव ने ॥
अब न कभी आत्मा से दूर जीजिए।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए ॥
चारों गति के बीच भ्रमी तेरी आत्मा।
पर विभाव में ही जियी तेरी आत्मा ॥
अब तो आप निज स्वभाव संग लीजिये।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए ॥
पाप-पुण्य भाव के विरस मिलाए हैं।
राग-द्वेष भाव के ही विष पिलाए हैं ॥
अब तो आत्मरस पिला के सौख्य दीजिए।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए ॥
अब तो निजात्मा में लाएँ ज्ञान की धारा।
बहकें न आप कभी पुण्य भाव के द्वारा ॥
उसको तो आप दूर से ही नष्ट कीजिए।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए ॥

आनंद सिन्धु आपके भीतर ही बह रहा।
इसमें प्रवेश करके न्हवन करो कह रहा॥
मिथ्यात्व ज़हर अभी पूरा वमन कीजिए।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए॥
बादल घिरे हैं ज्ञान के आकर अब निरखिये।
अपने स्वभाव को ही आप शीघ्र परखिये॥
सम्यक्त्व भाव को ही आप ग्रहण कीजिए।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए॥
भव ज्वार को उतारने का यत्न कीजिये।
निज भाव धारने का ही प्रयत्न कीजिये॥
फिर तो मोक्षसौख्य आप शीघ्र लीजिये।
अब न कभी आत्मा को धोखा दीजिए॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

श्री सुपार्श्व प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।

卐

ॐ

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन

स्थापना

(ताटंक)

संशय विभ्रम रहित पदार्थों का जो ज्ञान नहीं करता।
चंदा प्रभु की परम दिव्यध्वनि हृदयंगम न कभी करता ॥
चंद्र किरण सम कान्ति प्रतिष्ठित हुई आप चरणों में आज।
वन्दनीय गणधरादि ऋषियों से हैं चंद्रप्रभ जिनराज ॥
शुक्लध्यान रूपी दीपक के अतिशय से भव तिमिर विनाश।
खंड-खंड कर दिए घातिया पाया केवल ज्ञान प्रकाश ॥
जिनवर के अकाट्य वच सुनकर अहंकार उड़ जाता है।
सिंह गर्जना सुन ज्यों गज का मद विगलित हो जाता है ॥

(दोहा)

चंद्रपुरी में जन्म ले, किया आत्म कल्याण।
ललित कूट सम्मेद गिरि, पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चौपाई)

शाश्वत ध्रुव स्वभाव है अपना।
यह संसार सर्व है सपना ॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

आत्म स्वभाव शान्ति अति निर्मल।
भव आताप विनाशक उज्ज्वल॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

जीव स्वभाव अनंत गुणमयी।
अक्षयपद का धनी भवजयी॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निज निष्काम स्वभाव सुगंधित।
महाशील गुण से अनुबंधित॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

तृप्त-तृप्त निज शुद्ध आत्मा।
क्षुधा व्याधि विरहित परमात्मा॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

परम ज्ञान की ज्योति हृदय में।
नहीं मोहतम आत्मनिलय में॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

शुद्ध ध्यान फल अष्टकर्म क्षय।
नित्य निरंजन चिन्मय शिवमय॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

मैं अनादि से मोक्ष स्वरूपी।
बंध मोक्ष से रहित अनूपी॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

मेरे भीतर पद अनर्घ्य है।
द्रव्यदृष्टि निज शुद्ध वर्य है॥
चंद्रप्रभ के चरण जजूँ मैं।
मोह राग द्वेषादि तजूँ मैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

चैत्र कृष्ण की पंचमी, हुआ गर्भ कल्याण।
मात लक्ष्मणा हृदय में, आए जिन भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष कृष्ण एकादशी, हुआ जन्म कल्याण।
गिरि सुमेरु पान्डुक सुवन, गूँजा जय-जय गान॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष कृष्ण एकादशीं, चंद्रप्रभ जिनराज।
वस्त्राभूषण त्याग कर, हुए श्रेष्ठ मुनिराज॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमङ्गलप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

फागुन कृष्णा सप्तमी, हुआ ज्ञान कल्याण।
समवशरण रचना हुई, प्रगटा केवल ज्ञान॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

फागुन शुक्ला सप्तमी, हुआ मोक्ष कल्याण।
ललित कूट गिरि शिखर जी, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(दिग्वधू)

है जीव द्रव्य लक्षण चेतना ज्ञान दर्शन ।
गुण हैं अनंत इसमें इसमें न कहीं बंधन ॥
है पुद्गल द्रव्य प्रसिद्ध लक्षण अजीव जानो ।
यह चेतना से विरहित गुण भी अनंत मानो ॥

है धर्म द्रव्य निष्क्रिय ज्यों का त्यों रहता है ।
पुद्गल व जीव चलते सहकारी होता है ॥
निष्क्रिय अधर्म जानो ज्यों का त्यों रहता है ।
पुद्गल जीवों के रुकने में निमित्त रहता है ॥

करते द्रव्य काम नहीं केवल निमित्त बनते ।
वह भी जब चलें रुकें तब ही निमित्त बनते ॥
यदि नहीं चले कोई तो धर्म निमित्त नहीं ।
यदि रुके नहीं कोई तो अधर्म निमित्त नहीं ॥

आकाश द्रव्य का तो लक्षण अवगाहन है ।
अवगाहन देता है इसका यह लक्षण है ॥
है काल द्रव्य लक्षण वर्त्तना स्वभावी है ।
निष्क्रिय होने पर भी परद्रव्य अभावी है ॥

पुद्गल प्रदेश हैं एक संख्यात् असंख्य अनंत ।
आकाश द्रव्य के तो जु प्रदेश सदैव अनंत ॥
यह काल द्रव्य केवल बस एक प्रदेशी है ।
पर धर्म द्रव्य जानो असंख्यात प्रदेशी है ॥

ये अधर्म द्रव्य भी तो असंख्यात प्रदेशी है ।
अरु जीव द्रव्य सब ही असंख्यात प्रदेशी हैं ॥
सबमें अनंत गुण हैं निज निज में सीमित हैं ।
सर्वज्ञ कथित लक्षण सबको ही हितमित हैं ॥

जगती में जीव अनंत लक्षण चेतना सदा ।
पुद्गल हैं अनंतानंत लक्षण जड़ रूप सदा ॥
है धर्म एक जानो गति में जो सहकारी ।
है द्रव्य अधर्म एक स्थिति में सहकारी ॥

आकाश द्रव्य है एक अवगाहन देता है ।
है काल असंख्यातों जो समय प्रणेता है ॥
मैं जीव द्रव्य उज्ज्वल मैं जीव तत्त्व पावन ।
मैं ही हूँ जीव पदार्थ गुण मेरे मनभावन ॥

श्री चंद्रनाथ जिनवर की सुछवि निहारूँ मैं ।
प्रभु के चरणाम्बुज लख तत्काल पखारूँ मैं ॥
चिच्चमत्कार चिद्घन चैतन्य स्वरूपी हूँ ।
चिन्मयी चिदंकित हूँ चेतन चिद्रूपी हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

चंद्रप्रभ की पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः ।

卐

ॐ

श्री पुष्पदंत जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

पुष्पदंत जिन सुविधि नाथ प्रभु तीन भुवन में महा महान।
कर्म शत्रु के क्षय के पावन अनुष्ठान कर्त्ता भगवान ॥
जो अज्ञान भाव में उलझा उसका हर लेते अज्ञान।
मोक्ष प्राप्ति की सुविधि बताते स्वचतुष्टय का देते ज्ञान ॥
शिशु को उसकी माता नित्य उरस्थल से ज्यों चिपकाती।
किन्तु तरुण हो जाने पर न उरस्थल से वह चिपकाती ॥
तैसे शुद्धभाव के पहिले ज्ञानी पुण्यभाव करता।
शुद्ध स्वभाव भाव पाने पर कभी न पुण्यभाव करता ॥

(दोहा)

काकंदी में जन्म ले, किया जगत कल्याण।
सम्मेदाचल सुगिरि पर, प्राप्त हुआ निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(सरसी)

स्वानुभूति जल की महिमा का मुझको ज्ञान नहीं।
जब तक है मिथ्यात्व हृदय में निज का भान नहीं ॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

स्वानुभूति चंदन की पावन गंध नहीं भायी।
अतः न भवज्वर क्षय करने की बेला मुसकायी ॥

पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

स्वानुभूति के अक्षत अनुपम परम शान्ति के स्रोत।
अक्षय पद के दाता हैं ये शिव सुख ओतःप्रोत॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

स्वानुभूति के पुष्प अनूठे हैं निष्काम स्वरूप।
महाशील की महिमा से हैं ओतः प्रोत अनूप॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

स्वानुभूति के सुचरु क्षुधा की व्याधि विनाशक हैं।
पर परिणाम भाव भव -भव तक शिवसुख बाधक हैं॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

स्वानुभूति के दीप ज्योतिमय समकित रवि दाता।
स्वानुभूति बिन समकित कोई कभी नहीं पाता॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

स्वानुभूति की धूप ध्यानमय अष्टकर्म नाशक।
प्राणी सिद्ध स्वपद पा होता शिवपुर का शासक॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

स्वानुभूति के फल अति उत्तम मोक्ष प्रदाता हैं।
लोकालोक जानने वाले जग विख्याता हैं॥

पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं ।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

स्वानुभूति के अर्घ्य विस्मयी पद अनर्घ्य दाता ।
जो भी प्राणी निज को ध्याता परम सौख्य पाता ॥
एकमात्र निज आत्म सुछवि ही उत्तम मंगलमय ।
एकमात्र यह शरण भूत है पावन शिव सुखमय ॥
पुष्पदंत भगवान मोक्ष की सुविधि बताते हैं ।
करुण भाव से मोक्षमार्ग पर सबको लाते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

नवमी फागुन कृष्ण की, हुआ गर्भकल्याण ।
जयरामा उर अवतरे, पुष्पदंत भगवान ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

मगसिर शुक्ला प्रतिपदा, हुआ जन्म कल्याण ।
नृप सुग्रीव महान गृह, गूंजे जय-जय गान ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

मेघ विलय लख जग उठा, उर में पूर्ण विराग ।
एकम मगसिर शुक्ल की, दीक्षा ली वीतराग ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

कार्तिक शुक्ला दूज को, पाया केवलज्ञान ।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान पा, आप हुए भगवान ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयाम् ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

भादव शुक्ला अष्टमी, पाया पद निर्वाण ।
तीर्थराज सम्मेद गिरि, सुप्रभ कूट महान ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां मोक्ष मंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

जयमाला

(सोरठा)

पुष्पदंत परमेश, ज्ञान पुष्प प्रभु दीजिए ।
भवसागर का क्लेश, नाथ अभी हर लीजिए ॥

(समान सवैया)

मैं अनादि से रहा अजन्मा मरण नहीं मेरा स्वभाव है ।
अविनश्वर हूँ अजरामर हूँ मुझमें एक नहीं विभाव है ॥
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख सागर भरा सदा से तेरे भीतर ।
अन्तर के कोने-कोने में मेरे तो दुख का अभाव है॥
पूर्ण शान्त हूँ परम निराकुल मुझे विकार न छूने पाते ।
मैं अपने में ही रहता हूँ मेरा कहीं न आव जाव है ॥
शिव समुद्र का महास्रोत हूँशान्ति सिन्धु का प्राण समुज्ज्वल।
अमृत का सागर मैं ही हूँ निर्मल मेरा परम भाव है ॥
सूर्य चंद्र वन पर्वत भू दधि जड़ पुद्गल के महास्कंध हैं।
पुद्गल से संबंध नहीं कुछ ऐसे मेरा शुद्ध भाव है ॥
पर की परछाई तक का भी मुझमें कोई चिह्न नहीं है ।
एकाकी हूँ सदा अकेला यह मेरा एकत्व भाव है ॥
मैं अपने ही भावों में हूँ निजानंद रस पान निरंतर ।
गुण अनंत हैं मेरे भीतर उसमें पर का नहीं घाव है॥
मैं अपनी मर्यादा में हूँ पूर्ण संयमित मेरा जीवन ।
मैं जीवत्व शक्ति का स्वामी उत्तम उज्ज्वल ज्ञान भाव है॥
पुष्पदंत की महाकृपा से आत्मज्ञान रस मैंने पाया ।
राग-द्वेष मोहादि भाव के भावों का अब नहीं दाव है ॥
निज स्वभाव का अवलंबन है निज परिणति मेरी सहयोगी।
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव पर ही है सिद्धों सम मेरा स्वभाव है॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

पुष्पदंत प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय नम :

ॐ

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

चंद्र किरण से भी उत्कृष्ट शीतल हैं शीतलनाथ महान ।
प्रभु हेयोपादेय तत्त्व का ज्ञान आपने दिया प्रधान ॥
विषयसुखों की अभिलाषा की ज्वाला से यह मूर्छित जीव ।
तुव प्रदत्त ज्ञानामृत जल पी हो जाता है शान्त सदीव ॥
आत्मविशुद्धि पूर्वक निज में सतत जाग्रत रहते आप ।
भव्यजनों की भोगाकांक्षा का क्षय कर हर लेते संताप ॥
समभावों का दान दे रहे निज अभेद रत्नत्रय रूप ।
जन्म जरा मरणादि विनाशक केवल ध्रुव शुद्धातम स्वरूप॥

(दोहा)

भद्दिलपुर में जन्म ले, किए कर्म अवसान ।
सम्मेदाचल शिखर से, पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर शीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(वीरछंद)

कर्मों का अवसान किए बिन होगा कभी न निज उत्थान ।
बिना रात बीते ना होता कभी सूर्य का अभ्युत्थान ॥
मिथ्यादर्शन ज्ञान चरित्र धार कर पाए दुक्ख महान ।
भ्रमा चतुर्गति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

अपने से परिचय कर पहले भेदज्ञान की निधि पाकर ।
निज स्वरूप की सुछवि निरखले अपने ही भीतर जाकर ॥

फिर व्रत संयम धार तपस्या करके पाले पद निर्वाण।
भ्रमा चतुर्गति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

श्रमण बना है तो श्रम कर ले बाह्य झंझटों में न उलझ।
अन्तर्मन की गहराई में जा विभ्रम से अभी सुलझ॥
एकमात्र तेरा साथी है सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान।
भ्रमा चतुगर्ति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपढप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निज शुद्धात्मतत्त्व की महिमा तेरे भीतर है भरपूर।
पूर्ण अनंत चतुष्ट्य प्रकटा पर भावों से रहकर दूर॥
दर्शन ज्ञान अनंत वीर्य सुख पाते ही होगा कल्याण।
भ्रमा चतुगर्ति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

मोक्षमार्ग कुछ दूर नहीं है आत्मशक्ति को निरख निरख।
अपने बल को द्रव्य बनाकर अपने भीतर परख परख॥
रत्नत्रय की भक्ति प्राप्त कर शिवपथ पर कर ले अभियान।
भ्रमा चतुगर्ति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

जबतक रागों का है राग तभी तक भवदुख पाएगा।
बिना मोह मिथ्यात्व विनाशे कभी नहीं सुख पाएगा॥
निज सुख पाना है तो कर ले उर में स्वपर भेद-विज्ञान।
भ्रमा चतुगर्ति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय द्वीपं नि.।

भव ग्रंथियाँ पड़ी हैं भीतर उनके क्षय का कर पुरुषार्थ।
यदि कर लेगा तो पाएगा निश्चित ही निश्चय भूतार्थ॥
वीतराग निर्ग्रंथ दशा पाते ही होगा तू भगवान।
भ्रमा चतुगर्ति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

आत्मा को पाने का आत्मा ही साधन है परम महान।
आत्मा की चर्चा भी अति मनभावन है शिवपुर का यान॥

अविरति तथा प्रमाद असंयम अरु कषाय है दुख की खान।
भ्रमा चतुर्गति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

समकित अर्घ्य अष्ट अंगमय अष्टदोष से रहित महान।
अष्टमद रहित सम्यग्ज्ञान स्वभाव आत्मा का पहचान॥
तेरहविध चारित्र मनोरम अति प्रसिद्ध रत्नत्रययान।
भ्रमा चतुर्गति बीच सदा ही किया न शीतल प्रभु का ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

हुआ गर्भ कल्याण, चैत्र कृष्ण की अष्टमी।
पुलकित हुई महान, मात सुनन्दा हर्ष से॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ जन्म कल्याण, माघ कृष्ण की द्वादशी।
दृढ़रथ नृप भद्दिलपुरी, प्रमुदित हुए प्रमोद से॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

तप कल्याण महान, माघ कृष्ण की द्वादशी।
प्रभु का जय-जयगान, लौकान्तिक सुर कर रहे॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

प्रकटा केवलज्ञान, पौष कृष्ण की चतुर्दशि।
खिरने लगी प्रसिद्ध, शीतल प्रभु की दिव्यध्वनि॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सम्मेदाचल शीष, आश्विन शुक्लाअष्टमी।
हो गए त्रिभुवन नाथ, विद्युत कूट महान से॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लअष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

शीतलनाथ जिनेन्द्र, उपदेशामृत दीजिए।
करुणामयी जिनेन्द्र, हमको शीतल कीजिए॥

(दोहा)

इस असार संसार में, सार भूत है कौन।
निज स्वभाव पति आत्मा, भीतर बैठा जौन॥
इसके ही पुरुषार्थ से, मिलता शिवसुख राज्य।
जब शुद्धात्मा प्राप्त हो, पर हो जाता त्याज्य॥
लज्जा भय संयोग से, नहीं बोलता सत्य।
नहीं लोभ से छोड़ता, कभी विचार असत्य॥
संयम धारण की लगन, मन में भरी अटूट।
पर निर्बल चारित्र है, कैसे जाऊँ छूट॥
रत्नत्रय आराधना, करना है दिन-रात।
निश्चित इक दिन, पाएंगे मंगल मोक्ष प्रभात॥
विषय कुलाचल नष्ट कर, कर कषाय को क्षीण।
सम्यग्ज्ञान प्रकाश पा, हो जा ज्ञान प्रवीण॥
शीतलनाथ जिनेश का, है असीम उपकार।
हो जाऊँगा एक दिन, मैं भवसागर पार॥
मंगलमय सिद्धत्व का, मंगलमय वरदान।
मंगलमय आत्मत्व लख, करो आत्म कल्याण॥
यदि जाग्रत जीवत्व हो, तो क्षय हो मिथ्यात्व।
ज्ञानमयी जीतव्य हो, तो प्रकटे सम्यक्त्व॥
भाव वासना के बिना, सफल न हो पुरुषार्थ।
क्षय व्यवहाराभास हो, निश्चय हो भूतार्थ॥
गुण पर्याय स्वद्रव्य में, बसी हुई है वस्तु।
यही मुक्ति सुखदायिनी, इसको ध्याओ अस्तु॥
निज गुण गण मणि पूर्ण है, निज शुद्धात्म त्रिकाल।
लखते ही हो जाओगे, ज्ञायक भाव निहाल॥

तेरे भीतर ही भरा, पूर्ण मोक्षसुख स्वाद।
ज्ञायक का आश्रय करो, सुख पाओ अविवाद ॥
निष्कलंक निजभाव में, कहीं कलंक न रंच।
शिवसुख के अतिरिक्त हो, कोई नहीं प्रपंच ॥

जो आत्मा को देखता, कर्मबंध से युक्त।
वह बंधन करता सदा, होता कभी न मुक्त ॥
निज नगरी के मार्ग को, जाएगा यह जीव।
शिव नगरी को पहुँचकर, लेगा सौख्य सदीव ॥

वीतरागता का धनी, तू ही मोक्षस्वरूप।
कर्मबंध से रहित है, रागहीन चिद्रूप ॥
निडर निशंक स्वभाव, है सम्यक् श्रद्धावान।
निज आत्मा में रम रहा, वह ही है भगवान ॥

आत्मा के परिणमन में, बाह्य न कारक कोय।
निर्मल परिणति क्रिया से, यही स्वयंभू होय ॥
जो अनादि है शाश्वत, वह है सिद्ध स्वरूप।
उसे भूल कर डूबता, चहुँगति रूपी कूप ॥

सब ही में निज सिद्ध पद, पाने की है शक्ति।
पर आवश्यक है यही, उर में हो निज भक्ति ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(रोला)

शीतल जिन की पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम:

卐

ॐ

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

त्रिभुवन का कल्याण कर रहे श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
युक्त अजेय वाक्य से ही वे देते ध्रुव श्रेयस का ज्ञान ॥
मुख्य विविक्षित पदार्थ जानो अविवक्षित को जानो गौण।
भाव-अभाव द्रव्य-पर्यायों को जानो अब होकर मौन ॥
नहीं दृष्टिगोचर है कोई भी दृष्टान्त आपके सम ।
मुख्य-गौण बिन सारी कथनी कहलाती है महाविषम ॥
उदासीन होना ही शिवपथ में है सदा कार्यकारी।
क्षय एकान्तवाद जब होता तभी जीव हो अविकारी ॥

(दोहा)

सिंहपुरी में जन्म ले, तीन ज्ञान से युक्त।
सम्मेदाचल शीर्ष से, आप हुए प्रभु मुक्त ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर श्रेयांसनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर श्रेयांसनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(वीरछंद)

भावास्रव से द्रव्यास्रव है द्रव्यास्रव से है संसार ।
द्रव्यास्रव का निरोध हो तो निरोध होता है संसार ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश ।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भावास्रव के निरोध से ही द्रव्यास्रव का हो परिहार ।
द्रव्यास्रव जब रुक जाता है तब रुक जाता है संसार ॥

श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

भावास्रव बिन कभी नहीं होता है द्रव्यास्रव का बंध।
द्रव्यकर्म का बंध निर्जरा के द्वारा होता निर्बंध ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

संवर के बिन कभी भाव निर्जरा नहीं होती प्रारंभ।
भाव निर्जरा बिना द्रव्य निर्जरा कथन है खोटा दंभ ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

अहंकार रंजित कर्त्तृत्व भोक्तृत्व के ही परिणाम।
रागी जीवों के परिणामों का ही कर्म-चेतना नाम ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

सुख दुख के कारण मिलने पर सुख दुख का वेदनानुरूप।
ऐसे ही परिणामकर्मफलमयी चेतना के दुखरूप ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महा कृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

कर्त्ता बुद्धि सहित है जबतक ज्ञान-चेतना रंच नहीं।
ज्ञाता-दृष्टा भाव न जबतक कर्म-चेतना नष्ट नहीं ॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

चेतनत्व गुण जीवों में है शेष पाँच में अचेतन रूप।
मूर्तत्व गुण पुद्गल में है पाँचों में है अमूर्तरूप ॥

श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।

मूर्तत्व में रूप गंध रस पर्श गुणों का है सद्भाव।
अमूर्तत्व में रूप गंध रस पर्श गुणों का पूर्ण अभाव॥
दर्शन ज्ञान स्वभाव जीव का चेतनत्व कहलाता है।
दर्शन ज्ञान अभाव जहाँ हो अचेतनत्व कहलाता है॥
लक्षण जानो प्रमाण जानो नय निक्षेप चार जानो।
इन्हें जानकर निज पदार्थ को भली भाँति से पहचानो॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करूं विनाश॥
श्रेयांस जिन तीर्थंकर की महाकृपा से आस्रव नाश।
संवर सहित निर्जरा द्वारा पूर्व बंध का करो विनाश॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

माँ विमला पुलकित हुईं, ज्येष्ठ कृष्ण की षष्टमी।
हुआ गर्भ कल्याण, रत्नों की वर्षा हुई॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्टयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ जन्म कल्याण, फागुन वदि एकादशी।
सिंहपुरी नृपराज, विष्णु पिता हर्षित हुए॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जागा दृढ़ वैराग्य, फागुन वदि एकादशी।
तप कल्याण सुजान, लौकान्तिक प्रमुदित हुए॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया केवलज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
श्री श्रेयांस महान, हुए त्वरित सर्वज्ञ जिन ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ मोक्ष कल्याण, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
संकुल कूट प्रसिद्ध, सम्मेदाचल सुगिरि पर ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(पीयूष राशि)

पुण्यानुबंधी पुण्य भी किस काम का।
सुख मिलेगा चार दिन को नाम का ॥
फिर बहेगा पाप का सागर बड़ा।
देख फिर वह राग मुँह बाए खड़ा ॥
पता जबतक है न निज विश्राम का।
मार्ग पाएगा न फिर ध्रुव धाम का ॥

(विजया)

कर्म से जो भी उलझेगा दुख पाएगा।
कर्म से जो सुलझ लेगा सुख पाएगा ॥
कर्म फल चेतना से जो चिपकेगा तू।
कर्म के संग स्वयमेव बह जाएगा ॥
मोह की वासना से मैं अंधा हुआ।
दोष संचय में रहता हूँ हरदम मगन ॥
राग की वारुणी पीके मदहोश हूँ।
उससे छुटकारे का है नहीं कुछ यतन ॥
मैं विभावों के संग-संग बहता सदा।
अपने निज रूप को जानता ही नहीं ॥
मैं तो ज्ञाता हूँ दृष्टा हूँ चैतन्य हूँ।
अपनी शुद्धात्मा मानता ही नहीं ॥

आत्मचर्चा इसे तो सुहाती नहीं।
राग–द्वेषों की चर्चा में ही व्यस्त है॥
शुद्ध भावों का आदर भी करता नहीं।
इसलिए भवदुखों से सदा त्रस्त है॥
आज अवसर मिला है स्वपर ज्ञान का।
शुद्ध समकित की आयी है पावन पवन॥
मोह मिथ्यात्व हरने की बेला मिली।
फिर भी करता है दुष्कर्म एक–एक गिन॥
आज श्रेयांस प्रभु की मिली है शरण।
चेत रे चेत रे चेत रे चेत रे॥
बीज समकित का बोले भू समतल बना।
तेरा उर्वर निजात्मा का है खेत रे॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

श्रेयांस जिन की पूजन कर निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र –ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः।

卐

जय हो जय हो जिनवाणी की।
बज उठी सरस प्रवचन वीणा श्री वीतराग जिनवाणी की।
शुभ अशुभ बंध निज ध्यान मोक्ष जय हो वाणी कल्याणी की॥जय.॥
रस गंध पर्श रूपादिक शब्द ये तो पुद्गल की छाया है।
यह देह भिन्न चेतन से पुद्गल की गंदी काया है॥
जग के सारे पदार्थ पर हैं ध्वनि गुँजी केवल ज्ञानी की॥जय.॥

ॐ

श्री वासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

शत इन्द्रों से वन्दनीय हैं जिनवर वासुपूज्य भगवान ।
पंचक्रिया कल्याण कारिणी से भूषित हैं पूज्य महान ॥
नहीं प्रयोजन है पूजा का निन्दा से भी द्वेष नहीं ।
भद्र समंत सदा समभावी परभावों का वेश नहीं ॥
जो पूजा करते सुख पाते जो निन्दा करते वे दुख ।
जो तुव शरण ग्रहण करते हैं वे पाते सिद्धों सम सुख ।
उपादान जाग्रत होता है तो निमित्त आ जाता है।
उपादान सोया हो तो कुछ निमित्त ना कर पाता है ॥

(दोहा)

चंपापुर में ही हुए, प्रभु पाँचों कल्याण ।
जगत पूज्य प्रभु हो गए, वासुपूज्य भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(दोहा)

परम भाव जल मिल गया, हुआ स्वयं का ध्यान ।
समकित की निधि मिल गई, हुआ अतीन्द्रिय ज्ञान ॥
एक समय में गल गया, मेरा दर्शनमोह ।
कुछ दिन में जल जाएगा, मेरा चारित्रमोह ॥
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

ग्रंथि रहित निर्ग्रंथ हूँ, अतः सदा निर्बंध ।
द्रव्य भाव नो कर्म का, करता फिर भी बंध ॥
यह विचित्र आश्चर्य है, निज सहजात्म स्वरूप ।
फिर भी भवज्वर से दुखी, यह चेतन चिद्रूप ॥
वासुपूज्य की कृपा से करूँ आत्म कल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

जगदम्बे जिनध्वनि सुनी, फिर भी भ्रमित अजान ।
क्षय कर दे मिथ्यात्व तो, होय अबद्ध सुजान ॥
अक्षत ज्ञान शरीर में, नहीं रागज्वर कोय ।
मंगलमय मंगलकरण, फिर भी दुखिया होय ॥
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति, से पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निष्कामी निर्द्वंद्व है, नहीं काम दुखदाय ।
निष्क्रिय आत्मस्वभाव है, सक्रिय पर में काय ॥
महाशील का पुंज है, बाहर भव की आग ।
परम स्वगुण शीतल सहज, मात्र ऊपरी राग ॥
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

जो स्वभाव का आश्रय, लेगा वही अबंध ।
रस स्पर्श न शब्द है, फिर क्यों करता बंध ॥
निज नैवेद्य महान का, तुझे न अब तक ज्ञान ।
जियरा यह बतलाओ, तुम कैसे हो कल्याण ॥
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनायविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

ज्ञान ज्योति की भावना, सबसे श्रेष्ठ महान ।
भवनाशिनी स्वभावना, परम मोक्षसुख जान ।।
स्वयं प्रकट हो जाएगा, मेरा मोक्ष स्वरूप ।
सिद्धदशा होगी प्रकट, जब प्रकटे निज रूप ।।
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय दीपं नि.।

निर्मलता का धनी हूँ, समल बाहरी रूप ।
कर्म मलिनता क्षय करूँ, बन चेतन चिद्रूप ।।
रंगहीन हूँ सदा से, पचरंगी मत जान ।
इन्द्रिय रहित स्वरूप है, परम अतीन्द्रिय मान ।।
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय धूपं नि.।

महामोक्ष फल प्राप्ति हित, करो मोक्ष का ज्ञान ।
आत्मज्ञान के बिन नहीं, होता है कल्याण ।।
त्रिलोकाग्र तनुवात में, सिद्धचक्र गतिवान ।
अष्टकर्म रज से रहित, यही मोक्ष स्थान ।।
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अर्घ्यावलि के पुंज सब, साधक शिवसुख काज ।
पद अनर्घ्य अविलंब लूँ, मैं हूँ चेतनराज ।।
बंधनीय के बंध से, अब मत बंधक होय ।
सर्व कषाय अभाव कर, योग हरे सुख होय ।।
वासुपूज्य की कृपा से, करूँ आत्मकल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

हुआ गर्भ कल्याण, चम्पापुर के नगर में।
षष्ठी कृष्ण अषाढ़ मां, विजया हर्षित हुई ॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण षष्ट्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पितु वसुपूज्य सुगेह, फागुन कृष्णा चतुर्दशी।
सुखी हुए सब जीव, जन्म हुआ मंगलमयी ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

छाया उर वैराग्य, जन्मदिवस पावन हुआ।
किया आत्मकल्याण, पंचमहाव्रत धार उर ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ ज्ञानकल्याण, माघ शुक्ल द्वितिया दिवस।
प्रकटा केवल सूर्य, सहज हुए अरहंत जिन ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ मोक्ष कल्याण, भादव शुक्ला चतुर्दशी।
चंपापुर उद्यान, गिरि मंदार महान से ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(समान सवैया)

अब तो चेतन आत्मशक्तियों का सम्यक् स्वरूप उर धारो।
शक्ति अनंतानंत स्वयं में उन पर तन-मन-धन सब वारो ॥
हे चेतन जीवत्व शक्ति ले अभी मुक्तिपथ पर तुम चल दो।
निज आत्मत्व शक्ति के बल से अष्टकर्म अरिदल संहारो ॥
चिति दृशि वृत्ति शक्ति को जानो सुख अरु वीर्य शक्ति भीतर है।
प्रभुत्व विभुत्व सर्वदर्शित्व सर्वज्ञत्व शक्ति उर धारो ॥

निज स्वच्छत्व शक्ति के धारी निज प्रकाश शक्ति उत्तम है ।
असंकुचित्व विकासत्व की शक्ति सहित शिवमार्ग पधारो ॥
अकार्य कारण शक्ति पा परिणम्य परिणामात्मक शक्ति तुम्हारी।
त्यागोपादान शून्यत्व अरु अगुरुलघुत्व स्वशक्ति निहारो ॥
निज उत्पाद व्यय ध्रुवत्व की शक्ति तथा परिणाम शक्ति है ।
अमूर्तत्व अरु अकर्तृत्व से कर्त्तापन को तुम संहारो ॥
धनी अभोक्तृत्व शक्ति से ही अभोक्ता बने हुए हो ।
निष्क्रियत्व शक्ति से पर में निष्क्रिय रहना ही स्वीकारो ॥
निश्चय प्रदेशत्व शक्ति से पर प्रदेश में रहना छोड़ो ।
स्वधर्म व्यापकत्व शक्ति है साधारण असाधारण धारो ॥
निज अनंतधर्मत्व शक्ति से धर्म अनंतमयी निजात्मा ।
विरुद्ध धर्मत्व शक्ति है भीतर तत्त्व-अतत्त्व शक्ति उर धारो ॥
निज एकत्व-अनेकत्व की शक्ति लखो अपना बल तोलो ।
भाव-अभाव शक्ति है भाव-अभाव अभाव भाव उर धारो ॥
भाव शक्ति है क्रिया शक्ति है कर्म शक्ति कर्तृत्वशक्ति है ।
करण शक्ति है संप्रदान अरु अपादान है उसे संवारो ॥
शक्ति अधिकरण अरु संबंध शक्ति यह सैंतालीस मुख्य हैं।
किन्तु शक्तियाँ तो अनंत हैं सबके भीतर यह निरधारो ॥
वासुपूज्य प्रभु के चरणों में सभी शक्तियाँ मैंने जानी ।
अपनी आत्मशक्ति की महिमा जिनवर को लख मैंने मानी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

वासुपूज्य प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः ॥

卐

ॐ

श्री विमलनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

कर्मरूप पुदगल द्रव्यों के निमित्त से रागादि विकार ।
होते हैं उत्पन्न भूल से कहते विमलनाथ अविकार ।।
कर्मभूमि के भव्यात्मा का उपादान जब जाग्रत हो ।
शुद्ध आत्मनिर्णय करता जब तब निमित्त निज सुस्थित हो।।
जो सम्यक् उपदेश न देता वह सम्यक् आचार्य नहीं ।
बाह्याभ्यंतर कारण की पूर्णता बिना तो कार्य नहीं ।।
अंतरंग में उपादान कारण है निज योग्यता नहीं ।
बाहर में अनुकूल निमित्त है कारण को योग्यता नहीं ।।

दोहा

नगर कंपिला जन्म भू, विमलनाथ भगवान ।
मुक्ति भूमि है शिखर जी, पावन परम महान ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(माधव मालती)

आत्म के श्रद्धान बिन है ज्ञान तेरा सकल मिथ्या ।
ज्ञान गुण के स्वाद बिन जप तप व्रतादिक सर्व मिथ्या ।।
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. ।

मान्यता विपरीत है तो वस्तुतत्त्व स्वरूप कैसा ।
वस्तु तत्त्व स्वरूप जाने बिना निज का भान कैसा ।।

ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

त्रिकाली ध्रुव आत्मा ज्ञायक स्वभावी है सदा से ।
आत्मा में शुभ-अशुभ यह कथन झूठा है सदा से ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निज असंख्य प्रदेश इसके गुण अनंतों के सरोवर ।
यही इसका निवास स्थल समुज्ज्वल है अति मनोहर ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

द्रव्य क्षेत्र स्वकाल भाव स्वचतुष्ट्य का यह धनी है ।
बेलचित्रा रत्नचिन्तामणि यही अति पावनी है ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

भूल अपने को जगत में भ्रम रहा निज बुद्धि खोकर ।
मान्यता कर्तृत्व पर की पड़ी पीछे हाथ धोकर ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

परम ब्रह्म प्रकाश इसका सूर्य सम भीतर दमकता ।
ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या यही रवि उर में चमकता ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव ।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

एक दर्शन ज्ञानमय शिव शुद्ध ध्रुव फल अरूपी है ।
यही ''एकोऽहं'' द्वितीयोनास्ति'' कथनी विरूपी है ॥

ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

कषायों का बंध बल चालीस कोड़ा कोड़ी सागर।
बंध सत्तर कोड़ा कोड़ी कषायों से पृथक दुखकर ॥
जबकि सत्तर कोड़ा कोड़ी बंध तो मिथ्यात्व से है।
अकिंचित्कार है नहीं यह मिथ्यात्व बंधक सदा से है ॥
शुद्ध रत्नत्रय बिना शिवसौख्य दुर्लभ सदा से है।
यान रत्नत्रय मिला निज विमलप्रभु की कृपा से है ॥
ज्ञान बिन चारित्र मिथ्या मुक्तिपथ मिलना असंभव।
विमलनाथ प्रदत्त शिवपथ नष्ट करता है पुनर्भव ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

ज्येष्ठ कृष्ण दशमी दिवस, विमलनाथ भगवान।
जय देवी उर अवतरे, गूँजे जय-जय गान ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की चतुर्थी, कृतवर्मा महाराज।
हुआ कंपिलापुरी में, जन्म विमल जिनराज ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की चतुर्थी, तप कल्याण महान।
पंच महाव्रत धार कर, किया स्व-पर कल्याण ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की षष्टमी, हुआ ज्ञानकल्याण।
कर्म घातिया नाश कर, पाया केवलज्ञान ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठयां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सुदि आषाढ़ की अष्टमी, पाया मोक्ष महान।
शुभ सुवीर कुल कूट पर, गूँजे मंगल गान ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लअष्टम्यां मोक्षकल्याणप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

विमलनाथ जिनदेव, त्रिभुवन में विख्यात हैं।
ज्ञानपयोनिधि रूप, विमलभाव प्रभु दीजिए ॥

(गजल)

जान करके जिनेन्द्र को अभी वंदन कर लो ।
अपनी निज आत्मा के इनमें ही दर्शन कर लो ॥
तत्त्व बोधि से मालामाल तुम हो जाओगे ।
तत्त्व निर्णय से फिर तुम मोह महातम हर लो ॥
विषय कषाय की हवाएँ फिर न आएंगी ।
भाव अविकल्प तुम अब अपने हृदय में धर लो ॥
ज्ञान गंगोत्री का विमल स्रोत पाओगे ।
उसमे ही न्हवन करके शुद्ध नीर उर भर लो ॥
मोक्ष का जो स्वरूप है वह आत्मा का है ।
पर का तो छोड़ के घर आप अपना निज घर लो ॥
दुन्दुभि देव बजाएँगे स्वयं ही आकर ।
मुक्त आकाश में ही आप अब विचरण कर लो ॥
देह ही तो अनादि से तुम्हें सुहाती है ।
जो बुलाती है आत्मा उसे हृदय धर लो ॥
विमल जिनेश की कृपा को प्राप्त करके तुम ।
विमल स्वभाव के निज में जरा दर्शन कर लो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

(रोला)

विमलनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमः

ॐ

श्री अनंतनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

नम्रीभूत इन्द्र गणधर मुनि करते नमन अनंत जिनेश।
गुण अनंत महिमा तुव सुन कर प्राणी होते निर्ग्रंथेश॥
सर्व कषाय शत्रु जय करके ही तो आप हुए सर्वज्ञ।
निजानंद रस लीन महाप्रभु निश्चय से तो हो आत्मज्ञ॥
निष्कषाय निष्काम निरागी निर्द्वंद्वी नीरज भगवंत।
भवभावों का नाश कर चुके प्रकट अनंत चतुष्ट्यवंत॥
भोगाकांक्षा नष्ट कर चुके नोकर्मों को करके नष्ट।
तृष्णा नदी सुखायी तुमने पाया उत्तम तेज प्रकृष्ट॥

(दोहा)

नगर अयोध्या जन्म ले, किया आत्मकल्याण।
गिरि सम्मेदाचल हुए, प्रभु अधिपति निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(गीतिका)

भूलकर निज आत्मा तू भ्रम रहा संसार में।
भूलकर शुद्धात्मा तू पड़ा दुक्ख अपार में॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

गुण ग्रहण कर त्याग दे तू दोष सारे ही अभी।
स्वतः प्रकटेंगे स्वगुण निजआत्मा में फिर सभी॥

कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

विषम भावों में न रह तू साम्य भावों को सजा ।
ज्ञान में ही युक्त होकर बाँसुरी अपनी बजा ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

बाँध घुंघरु स्वाचरण के नाच फिर निज अंतरंग ।
निमिष में धुल जाएगा भव रागवाला सर्व रंग ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

श्वेत धवलोज्ज्वल अरूपी रूप होगा तब प्रकट ।
जब अरे तू जाएगा निज आत्मा के ही निकट ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

आत्मसीमा में अरे रह संयमित हो अभी आज ।
विसंगतियाँ छोड़ दे तू प्राप्त कर शाश्वत स्वराज ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

स्वभावों में पूर्ण सुख है विभावों में पूर्ण दुख ।
पुण्यरूप विभाव में है लेश मात्र कभी न सुख ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

गुण अनंत अपार अपने ही असंख्यप्रदेश में है ।
खोजने का श्रम किसी परभाव में न विदेश में है ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

मोक्ष तेरे पास में है स्वयं मोक्ष स्वरूप है ।
खोजता त्रैलोक्य ऊपर तो महाविद्रूप है ॥
मोक्ष होगा कहाँ पर किस क्षेत्र से यह तो बता ।
किसी भी पर क्षेत्र से तू मुक्त होगा कब जता ॥

आत्मा ही पूर्ण सुखमय आत्मा ही शाश्वत ।
देह जड़ पुद्गलमयी हर दृष्टि से जड़ रूपवत ॥
कब तलक भवदुख सहेगा कब तलक चहुँगति भ्रमण ।
प्रभु अनंत कृपा मिली है अब न कर तू अतिक्रमण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा, तज पुष्पोत्तर यान ।
माँ जयश्यामा स्वप्न फल, प्रकटा हृदय महान॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्य नि. ।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, गूँजे मंगलगान ।
सिंहसेन नृप अयोध्या जन्मे श्री भगवान ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्य नि. ।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, पा वैराग्य महान ।
लौकान्तिक सुर हर्ष से, करते तप कल्याण ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्याम् तपकल्याणक प्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्य नि. ।

केवलज्ञान महान पा, पाया पद सर्वज्ञ।
चैत्र कृष्ण की अमावसी, आप हुए आत्मज्ञ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअमावस्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

चैत्र कृष्ण की अमावसी, सम्मेदाचल शीश।
कूट स्वयंभू से हुए, त्रिभुवनपति जगदीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअमावस्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

नाथ अनंत महान, प्रभु अनंत सुख दीजिए।
भव का कष्ट वितान, क्षण भर में हर लीजिए॥

(उपमान - हो दीनबन्धु)

अपने स्वरूप का तो मुझे ध्यान नहीं है।
अपने स्वभाव भाव का भी भान नहीं है॥
पर द्रव्य के ही ध्यान में बीते हैं कितने काल।
निज पर को जानने का भेद ज्ञान नहीं है॥

रागों से की है दोस्ती सुख पाने के लिए।
अबतक विभाव भाव का अवसान नहीं है॥
मोहादि विकारों की ही मदिरा सदैव पी।
ज्ञानानुभूति रस का बहुमान नहीं है॥

सुर नारकादि पशु या नरगति में भ्रमा हूँ।
शुद्धात्मतत्त्व प्राप्ति का सामान नहीं है॥
संसार-मार्ग ही मुझे हर बार सुहाया।
पर मोक्ष-मार्ग पर मेरा प्रयाण नहीं है॥

निज आत्म की चर्चा मुझको नहीं भाती है।
उस चर्चा को सुनने के लिए कान नहीं है॥

गाता हूँ मैं तो गीत बहुत पुण्य भाव के।
शुद्धात्मा का अंतरंग गान नहीं है॥
पर्यायदृष्टि से ही बेहोश है जिया।
पर द्रव्यदृष्टि से तो बंधान नहीं है॥
मैंने अनंतनाथ के दर्शन किए हैं आज।
उनकी शरण बिना मेरा कल्याण नहीं है॥
शुद्धात्म तत्त्व श्रद्धा हो ज्यों की त्यों हृदय।
फिर जानिये कि मिथ्या श्रद्धान नहीं है॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

अनंतनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय नमः।

卐

भव भाव अगर है तो निज भाव नहीं होगा।
निज भाव अगर है तो भव भाव नहीं होगा॥
अपने स्वभाव का यदि बहुमान नहीं है तो।
निज आत्म तत्व श्रद्धा का भाव नहीं होगा॥
अब भेद ज्ञान को ही आधार बनाओ तुम।
बिन भेद ज्ञान के तो ध्रुव भाव नहीं होगा॥
समकित पाना है तो तत्वाभ्यास कर लो।
समकित होगा तो फिर पर भाव नहीं होगा॥
रत्नत्रय रथ पर चढ़ शिवपथ पर अभी चलो।
शिवपथ पाते ही फिर भव भाव नहीं होगा॥
जिन आगम के द्वारा तत्वों का ज्ञान करो।
उर तत्व ज्ञान है तो दुर्भाव नहीं होगा॥

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

ध्यान धुरंधर धर्मनाथ प्रभु धर्मतीर्थ कर्त्ता शिवयान ।
क्षमा आदि दश धर्म विधायक धर्म चक्रवर्ती भगवान ॥
समीचीन शिवसौख्य प्रदाता स्वर्गादिक सुख के कारण ।
महादीर्घ भवसागर लघु कर देते आप तरण तारण ॥
गुण अनंत ताराओं से परिवेष्टित प्रभु का निज आकाश ।
निर्मल पूर्ण चंद्रसम शोभित उज्ज्वल केवलज्ञान प्रकाश ॥
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित धर्म जिनेन्द्र तीर्थंकर ।
भव बाधाओं के क्षयकर्त्ता अचिन्तनीय तुम ही शिवकर ॥

दोहा

रत्नपुरी में जन्म ले, धारा धर्म महान ।
सम्मेदाचल मोक्ष पा, हुए सिद्ध भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(ताटंक)

तू अस्तित्व स्वगुण का स्वामी तेरा कभी न क्षय होगा ।
गुण अनंत का तू समुद्र है अतः न कभी विलय होगा ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला ।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. ।

तू वस्तुत्व स्वगुण से भूषित है स्वचतुष्ट्य में सुस्थित।
तेरा जड़ तन तेरे स्वचतुष्ट्य से है न्यारा निश्चित ॥

धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

वर्तमान अज्ञान दशा से मत निराश हो हे प्राणी।
तू द्रव्यत्व स्वगुण पति इक दिन होगा तू सम्यग्ज्ञानी॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

प्रदेशत्व गुण तेरे भीतर विश्व निछावर है तुझ पर।
पर पदार्थ के प्रति न व्यग्र हो पूर्ण ज्ञान तेरे भीतर ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

मुक्त आत्मा अगुरुलघुत्व स्वगुण से भूषित रहती है।
एकक्षेत्र अवगाही फिर भी निज सत्ता में रहती है ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

प्रदेशत्व गुण का स्वामी तू ज्ञानाकार स्वरूप महान।
निराकार चेतन प्रकाशमय आत्मप्रदेश युक्त भगवान ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

कार्माण पुद्गल स्कंधों का आत्मा से जो संबंध।
ज्ञानावरणादिक वसु कर्मों का कहलाता प्रकृति बंध ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

बँधनेवाली कर्म वर्गणाओं की संख्या प्रदेश है बंध ।
कार्माण वर्गणा मूर्छित प्राणी ही होते है अंध ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला ।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

बंध आत्मा से कर्मों की समयावधि है स्थिति बंध ।
जो अन्तमुहुर्त्त से सत्तर कोड़ी सागर करती द्वंद्व ॥
कर्मों के फल देने की ही अधिक शक्ति भाव अनुसार ।
यह अनुभाग बंध कहलाता इसका तो ये ही व्यापार ॥
धर्मनाथ की महाकृपा से शुद्ध ज्ञान का सुतरु फला ।
निज स्वभाव दर्शन करते ही पायी सम्यग्ज्ञान कला ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

त्रयोदशी वैशाख सुदि, हुआ गर्भ कल्याण ।
मात सुव्रता उदर में, आए श्री भगवान ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां गर्भ मंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की त्रयोदशी, रत्नपुरी के मध्य ।
भानुराज गृह जन्म सुन, धन्य हुए सव भव्य ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माघ शुक्ल की त्रयोदशी, तपो दिवस जिनराज ।
पूर्ण देश संयम लिया, पाया निज पद राज ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष शुक्ल की पूर्णिमा, हुआ ज्ञान कल्याण ।
स्व-पर प्रकाशक ज्ञान पा, ज्ञायक हुए महान ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.

ज्येष्ठ शुक्ल की चतुर्थी, धर्मनाथ भगवान।
कूट सुदत्त महान से, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्याम् मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

धर्मनाथ जिनराज, आत्मधर्म का ज्ञान दो।
पाऊँ निज पद राज, ऐसा दृढ़ श्रद्धान दो॥

(उपमान - दिग्पाल)

निज आत्मा कहाँ है मैं हूँ जहाँ वहाँ है।
शुद्धात्मा कहाँ है निज आत्मा जहाँ है॥
परमात्मा कहाँ है शुद्धात्मा जहाँ है।
शुद्धात्मा कहाँ है सिद्धात्मा जहाँ है॥

सिद्धात्मा कहाँ है ज्ञानात्मा जहाँ है।
ज्ञानात्मा कहाँ है परमात्मा जहाँ है॥
दर्शन है आत्मा में तो ज्ञान फिर कहाँ है।
निज आत्मा जहाँ है यह ज्ञान भी वहाँ है॥

अबतक पता नहीं है बहिरात्मा कहाँ है।
बहिरात्मा कहाँ है बस मूढ़ता जहाँ है॥
देखो स्व अंतरात्मा परमात्मा वहाँ है।
परमात्मा कहाँ है मैं हूँ जहाँ वहाँ है॥

(उपमान-हे दीन बंधु)

दुनिया में आत्मा का नाम जिसने न जाना।
उसको न मिलेगा कभी कोई भी ठिकाना॥
गति-गति में घूमता रहेगा दुख उठाएगा।
होगा न सुख से वास्ता जो निज से अजाना॥

जिसने भी ज्ञान भाव से निज रूप न देखा।
उसने न निज स्वरूप को सम्पूर्णतः जाना॥

जो शुद्ध बुद्ध है प्रबुद्ध ज्ञानमयी है ।
वह देह में विराजमान सिद्ध समाना ॥
यदि चाहते हो मोक्ष सुख महान निजंतर ।
तुम ज्ञान गीत उसके शुद्ध भाव से गाना ॥
व्यवहार का गाना तो तुमने बहुत दिन गाया ।
निश्चय का गीत अब तुम्हें हर बार है गाना ॥
श्री धर्मनाथ प्रभु का उपदेश ध्यान से सुन ।
निश्चय करो कि अब फिर भव में नहीं आना ॥
तुम ज्ञानदर्शनी हो चैतन्य चमत्कारी ।
श्रम करके अपना शिवपद इस बार है पाना ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरधर्मनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

धर्मनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः ।

卐

मैंने प्रभु के चरण पखारे ।
जनम, जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे ॥१॥
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा ऊपर ढारे ।
वीतराग अरिहंत देव के गूंजे जय जय कारे ॥२॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे ।
पावन तन मन, नयन भये सब दूर भये अंधियारे ॥३॥

ॐ

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

सकल जगत को शान्ति प्रदाता शान्तिनाथ जिनवर प्रभु आप।
देव समूह हुआ बद्धांजलि उर धर्मोपदेश कर प्राप्त ॥
अपने दोष शान्त करके प्रभु नाश किए भव्यों के दोष।
शान्ति विधाता शान्ति सिन्धु प्रभु निरहंकारी हो निर्दोष ॥

दयामूर्ति मुनि बन सारे पापों की तुमने की प्रभु शान्ति।
दिव्य ध्वनि उपदेश दान कर क्षय कर दी भव्यों की भ्रान्ति ॥
नाथ दया प्रवृत्ति से तुमने मोक्षमार्ग को बतलाया।
अष्टादश दोषों को जय कर शुद्ध अदोष रूप पाया ॥

(दोहा)

जन्म हस्तिनापुर नगर, तीन ज्ञान से युक्त।
गिरि सम्मेद महान से, हुए शान्ति जिन मुक्त ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(ताटंक)

कोमल मृदुल स्वभाव आत्मा का कठोर हो गया प्रभो।
कैसे कोमल बने आत्मा यह बतलाओ मुझे विभो ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्म तत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

अनंतानुबंधी कषाय अज्ञानमयी दुखदायक है ।
विनयमूल निज शान्ति सिन्धु ही समता स्वगुण प्रदायक है॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्म तत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

मान कषाय नीच अति घातक भव-भवभ्रमण कराती है ।
शेष कषायों के बल को यह प्रतिपल बहुत बढ़ाती है ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

मैं भंडार विनय गुण का हूँ फिर भी उद्धत हूँ स्वामी ।
कैसे विनय भाव उर लाऊँ बतलाओ अंतर्यामी ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

विनयपूर्वक जिनदर्शन करने का भाव नहीं आता ।
मानपूर्वक दर्शन करके मात्र नियम ही सध पाता ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

विनय दीप की दिव्यज्योति का पाया अब तक नहीं प्रकाश।
इसीलिए विभ्रम में जीवित रहकर पाया जगत निवास ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

विनय धूप ले ध्यान न कर पाया मैं अब तक भलीप्रकार ।
कर्म क्षार कैसे होते प्रभु मुझको भाया भव व्यवहार ॥

परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

विनय सुफल की महिमा से यदि हो जाता मैं ओत-प्रोत।
महामोक्षफल शाश्वत सुख तरु का पा जाता मै ध्रुव स्रोत॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अविनयपूर्वक अर्घ्य बनाए पद अनर्घ्य कैसे मिलता।
त्रैकालिक ध्रुव स्वभाव का भी सूर्य प्रभो कैसे खिलता ॥
इस कषाय का पीछा करते-करते भव अनंत बीते।
किन्तु न कोई भी भव भाव हृदय से नाथ कभी रीते ॥

निज स्वभाव को यदि विनयांजलि अर्पित कर दूं तो हे देव।
विनय समुद्र पास आ जाए अवगाहन के हित स्वमेव ॥
परम शान्ति सुखदाता स्वामी जिनवर शान्तिनाथ भगवान।
आत्मतत्त्व का रहस्य जानूँ आठों कर्म करूँ अवसान ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

भादों कृष्णा सप्तमी, शान्तिनाथ भगवान।
माँ ऐरा उर अवतरे, वाराणसी महान ॥
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

विश्वसेन नृपराज के गृह जन्में भगवान।
ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, हुआ जन्मकल्याण ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचर्तुश्यां जन्मकल्याणकप्राप्तये श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, पाया तपकल्याण।
मेघविलय लख प्रभु हुए, निर्ग्रंथेश प्रधान ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष शुक्ल दशमी दिवस, हुआ ज्ञानकल्याण।
केवलज्ञानी हो गए, महिमामयी भगवान ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, हुआ मोक्षकल्याण।
कूट कुन्दप्रभ से प्रभो, पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

शान्तिनाथ प्रभु शान्ति, निज समान दे दीजिये।
मेरी सारी भ्रान्ति, हे स्वामी हर लीजिए ॥

(सरसी)

चौथा गुणस्थान पाकर पंचम में जाएँगे।
ग्यारह प्रतिमा पालनकर फिर मुनि बन जाएँगे॥

सप्तम षष्टम गुणस्थान में झूला झूलेंगे।
पूर्ण देशसंयम धारण कर हम हर्षाएँगे ॥

जब प्रमत्त में आएंगे तो हम व्रत पालेंगे।
अप्रमत्त में निर्विकल्प हो ध्यान लगाएँगे ॥

शुक्ल ध्यान का पहिला पाया अष्टम में होगा।
निजबल से धीरे-धीरे श्रेणी चढ़ जाएँगे ॥

अष्टम से हम नवम तक निर्मल ध्यान करें।
ग्यारहवें से डर लगता नीचे गिर जाएँगे ॥

फिर बारहवें तक जाने का यत्न करेंगे हम।
क्षीणमोह पा चार घातिया त्वरित नशाएँगे ॥

तत्क्षण ही प्रभु गुणस्थान तेरहवाँ पा करके ।
केवलज्ञान सूर्य अतिपावन हम तो पाएँगे ॥
कुछ दिन रहकर निजानंद रसपान करेंगे हम ।
फिर अघातिया क्षय करने चौदहवाँ पाएँगे ॥
शेष प्रकृति पच्चासी क्षय कर पाएँगे निज पद ।
एक समय में ऊर्ध्वलोक जा शिवसुख पाएंगे ॥
त्रिलोकाग्र पर सिद्ध शिला है अपना सिंहासन ।
उस पर त्वरित विराजित होकर निज रस पाएंगे ॥
शान्तिनाथ की महाकृपा से महाशान्ति पाएँ ।
परम शान्ति का केतु हृदय में हम लहराएँगे ॥
वसुकर्मों की भवज्वाला को हमें बुझाना है ।
उसे बुझाए बिना कभी हम चैन न पाएँगे ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरशान्तिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद
(रोला)

शान्तिनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

हम तो निश्चय संयम पायो ।
बिन संयम चारों गतियों में बेर बेर भरमायो ।
समकित ज्ञान चरित्र सुनिश्चय पायो मन हरषायो ॥
निज परिणति संग नाच्यो अब मैं आनंदघन निज पायो ।
मोक्ष मार्ग सम्पूर्ण पार कर सिद्ध स्वपद दरशायो ॥

श्री कुन्थुनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

भोगाकांक्षा नदी पारकर पहुँचे भवसागर के पार ।
इन्द्रियदमन कुन्थुप्रभु ने कर क्षय कर डाले राग विकार ॥
षट्‌खंडों का साम्राज्य भी छोड़ा त्वरित जीर्ण तृषसम ।
मोहादिक अरि जीते क्षण में जीते भव के भाव विषम ॥
निज पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा पाया सार्वभौम जिनधर्म ।
रत्नत्रय शस्त्रों के द्वारा किए पराजित आठों कर्म ॥
ध्यानरूप अभ्यंतर निर्मल ज्ञान आपका महिमामय ।
केवलज्ञान रूप ज्योतिर्मय पद सर्वज्ञ परम शिवमय ॥

(दोहा)

जन्म हस्तिनापुर नगर, तीनों पद से युक्त ।
गिरि सम्मेद शिखर गए, और हो गए मुक्त ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(गीतिका)

याचना का काम क्या है, जब कि तू आपूर्ण है ।
गुण अनंतानंत से जब, स्वयं तू परिपूर्ण है ॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भव बंधन हरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

आन्तरिक आत्मत्व तो है, पूर्णतः आनंद धाम ।
गुण अनंतों का उदधि है, शाश्वत है ध्रुव विराम॥

कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

आत्मदर्शन विरल उनको, जिन्हें पर का ध्यान है।
अमृत भी है गरल जिनको, नहीं निज का भान है॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

ऊर्जा निज आत्मसात न, हो सकी तो धर्म व्यर्थ।
आत्म परिचय के बिना तप, का नहीं है अल्प अर्थ॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

निर्विकल्प स्वभाव में, जल्पादि का क्या काम है।
कल्पनाओं की उड़ानों, का न कोई नाम है॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

भावना भवनाशिनी भायी, नहीं तो क्या किया।
व्यर्थ यह नर जन्म खोया, व्यर्थ ही पर में जिया॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

नकारात्मक भावना, कल्याणमय होती नहीं।
सकारात्मक वासनाएँ, ज्ञानमय होती नहीं॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

आभिजात्य स्वकुसुम दर्शन, ज्ञान के लाओ अभी ।
विषमताएँ क्षीण होगीं, तुम्हारी पल में सभी ॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

सहज शिव सौन्दर्य की, महिमा सजाओ अंतरंग ।
सभी रंगों से अलग है, आत्मा का ज्ञान रंग ॥
प्राप्त होगी ज्ञान की, निर्मल तरंगों की हिलोर ।
मोक्षसुख की प्राप्ति होगी, एक दिन होगी स्वभोर ॥

पूर्ण पथ होता तभी, शिवद्वार खुलते विनय से ।
शुद्ध चेतन निरंजन, जुड़ता शिवम् के निलयसे ॥
कुन्थुनाथ महान प्रभु को, विनय से वंदन करूँ ।
पूर्ण ज्ञान प्रकाश पाकर, सकल भवबंधन हरूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

हुआ गर्भकल्याण, नगर हस्तिनापुरी में।
दशमी श्रावण कृष्ण, श्रीमती उर अवतरें ॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ जन्मकल्याण, एकम सुदी वैशाख को।
देते दान महान, सूर्यसेन पितु हर्ष से ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

एकम सुदी वैशाख, कल्याणक निष्क्रमणदिन ।
लिए महाव्रत पूर्ण, तिलक वृक्ष तल आपने ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया केवलज्ञान, चैत्र शुक्ल की तृतीया।
किया ज्ञान कल्याण, सुरपति ने रच समवसृत।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीया ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया निज ध्रुवधाम, एक सुदी वैशाख को।
कूट ज्ञान धर श्रेष्ठ, सम्मेदाचल शिखर से॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

कुन्थुनाथ जिनराज, मंगलमय मंगलचरण।
शरण मिली है आज, तुम ही तो तारण तरण॥

(समान सवैया)

कलियों ने अवगुन्ठन खोले पुष्पों की लेकर अंगड़ाई।
उपवन की बूढ़ी सुगंध में भी फिर आयी है तरुणाई॥
भोर हुई वन पंछी जागे मादक सरिता भी लहराई।
लहर-लहर लहराए सरवर पवन चली रसमय सुखदायी॥

तू बैठा है मूढ़ किनारे तुझे न निज की सुध-बुध आयी।
भ्रमित कामनाओं से पीड़ित आँख न तेरी है खुल पायी॥
यह सम्यग्दर्शन का मौसम व्यर्थ खो रहा तू शिवदायी।
बना हुआ है तू अनादि से मेरे प्रिय चेतन विषपायी॥

अगर न चेता अब भी चेतन तो नरभव भी पीड़ा दायी।
सद्गुरु ने अति कठिनाई से जिनवाणी तुझको समझायी॥
ज्ञान हिलोर तुझे दुलारने और जगाने को है आयी।
अभी जाग जा अरे बावरे शिव सुखदायी बेला पायी॥

चेतन से जड़ बहुत भला है वह स्वभाव निज कभी न तजता।
यह पुद्गल ही तो महान है जो चेतन को कभी न भजता॥

चेतन जैसा मूढ़ नहीं है जो परद्रव्यों को ध्याता है।
चेतन अपने निज स्वभाव को तजकर पर घर में जाता है॥

इसी भूल से काल अनंतानंतों तक भवदुख पाया है।
निज स्वभाव को भूल चतुर्गति में इसने चक्कर खाया है॥
जड़ से यदि कुछ सीखे तो फिर यह स्वभाव अपने में आए।
अपने स्वचतुष्ट्य में रहकर सदा-सदा में शिवसुख पाए॥

कुन्थुनाथ प्रभु ने स्वतंत्रता का उद्घोष किया शिव सुखमय।
जिसको सुनकर प्राणी हो जाता है महामोक्ष मंगलमय॥
मैं भी यही मोक्षमंगल पाने का यत्न करूँ हो स्वामी।
मेरी भवितव्यता विमल है आप जानते अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

कुन्थुनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः।

卐

कुन्थुनाथ प्रभु तुम्हें पुकारूँ मैं।
ऐसी मति दो एक वार निज स्वपद निहारूँ मैं॥
भव समुद्र दल दल से निकरूँ रूप निखारूँ मैं।
जर जर तरणी डगमग डोले पार उतारूँ मैं॥
कर्म शत्रु शिव सुख के घाता इन्हें संहारूँ मैं।
सिद्ध शिला पर पास आपके नाथ पधारूँ मैं॥

ॐ

श्री अरनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

कामदेव तीर्थंकर चक्री, षट्खंडों के अधिपति नाथ।
उदसीन हो साम्राज्य सब, त्यागा जय-जय हे अरनाथ॥
अनेकान्त से सर्व संभवित, दोषों का होता परिहार।
अवक्तव्य वक्तव्य सुपद्धति, स्याद्वाद ही है हितकार॥
वक्ता का अभिप्राय सत्य, अथवा असत्य नय से दूषित।
वस्तु तत्त्व निरपेक्ष त्रिकाली, नयातीत गुण से भूषित॥
तत्त्व विवेचन में विरोध को, स्यात् शब्द करता है दूर।
वस्तु तत्त्व प्रतिपादन निश्चय-नय से होता है भरपूर॥

(दोहा)

जन्म हस्तिनापुर नगर, श्री अरनाथ महान।
सम्मेदाचल शैल से, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(गीतिका)

क्रोध रंच न करो तुम अब, समस्वरित जाग्रत बनो।
मात्र ज्ञाता और दृष्टा, रह किसी से मत तनो॥
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन॥

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

वर्त्तमान, तनाव मुक्त सुगंध से भरपूर है ।
सुथिर ध्यानाकाश में आनंद निज आपूर है ।।
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

धर्म अन्तर्यात्रा है, पूर्वाग्रह है रहित ।
ध्यान उसका मार्ग प्रखर, प्रयास श्रम से है विहित ।।
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

केन्द्र निज अस्तित्व का, ध्रुव ऊर्जा का स्रोत है।
इसी में आध्यात्मिक, ऐश्वर्य ओतः प्रोत है ।।
जिनेंश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

दृष्टि त्याग रहस्य दर्शी, तृप्ति का भंडार बन ।
भव सतह को छोड़ कर तू, ध्रुव सतह आधार बन ।।
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

ज्ञान अनुसंधान द्वारा, चेतना अपनी जगा ।
जो विकारों की पवन है, आत्मबल से अब भगा ।।
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

काल्पनिक संभावनाएँ, भूलकर निज ध्यान कर ।
तू स्वयं कल्याणमय है, तू स्वयं का ज्ञान कर ।।

जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन॥

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

ध्यान धन सर्वोत्तम, संसार में अनमोल है ।
ध्यान के संस्पर्श से ही, आत्मा की तोल है ॥
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन॥

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

भव्यजन आसन्न पुलकित, खोज लेते मुक्तिपथ ।
सहज रत्नत्रय बढ़ाता, मुक्ति के पथ पर स्वरथ ॥
जहाँ धरते चरण तुम प्रभु, वहाँ मंगल नाचता ।
अंतरीक्ष स्ववाद्य बजते, ज्ञान उर में राचता ॥
जिनेश्वर अरनाथ के, चरणाम्बुजों को है नमन ।
आपका उपदेश सुनकर, करूँ शिवसुख का यतन॥

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद्प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

फागुन शुक्ला तीज, माँ मित्रा उर अवतरे ।
बरसे रत्न अपार, पंद्रह मास सुजन्म तक ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

हुआ जन्मकल्याण, मगसिर शुक्ला चतुर्दशी ।
घर–घर तोरणद्वार, नृपति सुदर्शन मुदित हैं ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

मगसिर शुक्ला चतुर्दशी, तप धारा अरनाथ ने ।
तजा चक्रवर्त्तित्व, वस्त्राभूषण त्याग कर ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

हुआ ज्ञानकल्याण, कार्तिक शुक्ला द्वादशी।
हुए आप अरहंत, कर्म घातिया नाश कर॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया ध्रुव निर्वाण चैत्र, कृष्ण मावस दिवस।
कीने भोग अभाव, नाटक कूट सुशिखरजी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअमावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

श्री अरनाथ महेश, केवल ज्ञान प्रकाश वर।
आप हुए विश्वेश, अष्टकर्म अरिनाश कर॥

(राधिका)

कर्मादि शक्तियों का रस है दुखदायी।
रत्नत्रय रस ही है पूरा सुखदायी॥
श्रद्धान ज्ञान चारित्र शुद्ध रत्नत्रय।
इसकी है पावन भक्ति परम मंगलमय॥

भव राग आस्रव बंधमयी होता है।
रागों का राग सदैव अंध होता है॥
इससे बचने का है उपाय जिन आगम।
रागों के क्षय में यह चेतन है सक्षम॥

आगम अनुसार चले तो सुख पाओगे।
विपरीत चले तो पूरा दुख पाओगे॥
पिछली भूलों का अब परिहार करो रे।
मिथ्यात्व मोह को अब सम्पूर्ण हरो रे॥

समकित की विजय दुन्दुभी आज बजी है।
छवि सम्यग्ज्ञान हृदय में आज सजी है॥
चारित्र शक्ति का साधन ही सुखकारी।
रत्नत्रय की है भक्ति परम उपकारी॥

अब तो प्रयाण शिवपथ पर करना होगा ।
शिवपथ अभियानी बन दुख हरना होगा ॥
फिर मुक्ति मार्ग की मंजिल तुम पाओगे ।
अपना सिद्धत्व प्रकट उज्ज्वल लाओगे ॥

अरनाथ जिनेश्वर परम शक्ति के दाता ।
भव भय के हर्त्ता अखिल विश्व विख्याता ॥
संसार दुखों से हे प्रभु घबराया हूँ ।
अतएव आपकी शरण आज पाया हूँ ॥

मुझको सन्मार्ग प्रदान करो हे स्वामी ।
यह विनय सुनो घट-घट के अन्तर्यामी ॥
यह कर्म आवरण मेरा स्वामी हर लो ।
अपने समान हे प्रभु मुझको भी कर लो ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरअरनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

अरहनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

नाथ अर की महिमा न्यारी ।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर प्रभु भव दुखहारी ।
तीर्थंकर जिनवर परमेश्वर संयम अवतारी ॥
पर परिणति को क्षय कर पायी निज परिणति प्यारी ।
दर्शन मोह विनाशक क्षायिक समकित के धारी ॥
केवलज्ञानी हुए आप प्रभु गुण अनंत धारी ।
मुझको भी तारो भव दधि से भव समुद्र तारी ॥

ॐ

श्री मल्लिनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

मल्लिनाथ ने मोह मल्ल को, पल में किया पूर्ण असमर्थ।
तुव संस्तुति से पाप नष्ट, करने में होता जीव समर्थ ॥
इन्द्रिय विजयी आगमनायक, हे दमतीर्थ ज्ञान तीर्थेश।
भव्यजनों को देते हो, प्रतिबोध आप ही हे विश्वेश ॥

प्रांजल बद्धांजलि के द्वारा, गणधर करते तुम्हें प्रणाम।
राग द्वेष से रहित सर्वथा, वीतराग जिनवर निष्काम ॥
निज दैदीप्यमान आभा से, करते लोकालोक प्रकाश।
अष्टकर्म [illegible] से विहीन जिन, श्रेष्ठ मुक्ति में करते वास ॥

दोहा

मिथिला नगरी जन्म ले जगत कल्याण।
गिरि सम्मेद प्रसिद्ध से पाया पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर मल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(दोहा)

अरहंतों की शरण में, स्वर्गो का सुख जोय।
आत्मतत्त्व की शरण में, पूर्ण मोक्षसुख होय।
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

रागी देवी देवता, समकित होन न देत।
जब-जब जिय उद्यम करे, तब-तब मति हर लेत॥

मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

अरहंतों की छाँव भी, शिवपथ बाधक होय ।
शुद्धात्मा की छाँव जा, तो फिर शिवसुख होय ।।
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

नहीं अकिंचित्कर कहा, आगम में मिथ्यात्व ।
बंध हेतु है कर्म का, मुख्य यही मिथ्यात्व ॥
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

क्षय मिथ्यात्व न होयगा, कभी बिना सम्यक्त्व ।
होगा जब सम्यक्त्व तो, प्रकटेगा आत्मत्व ॥
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

धर्म प्राप्ति में तो सदा, बाधक है मिथ्यात्व ।
धर्म प्राप्ति में तो सदा, साधक है सम्यक्त्व ॥
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

कहा अकिंचित्कर नहीं, शिवपथ में मिथ्यात्व ।
क्षय कषाय नहीं होंगी, बिन नाशे मिथ्यात्व ॥
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

होता है मिथ्यात्व से, ही सर्वाधिक बंध ।
फल सम्यक्त्व महान से, हो जाता निर्बंध ॥

मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.।

काललब्धि पुरुषार्थ बिन, आती कभी न पास ।
काललब्धि तू प्राप्त कर, पाले ज्ञान सुवास ॥
नाशवान संसार है, नश्वर पर का नाम ।
गुण अनंत तेरे सगे, उनमें कर विश्राम ॥
मल्लिनाथ जिनराज की, महिमा अपरंपार ।
आत्म तत्त्व की शक्ति से, जिय होते भवपार ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

छंद - सोरठा

मिथिलापुरी प्रसिद्ध, प्रभावती उर अवतरे ।
गूँजे मंगलगान, चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

भव्य जन्मकल्याण, मगसिर सुदि एकादशी ।
देते दान अथाह, कुंभराज नृप हर्ष से ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

तप धारा जिनराज, मगसिर सुदि एकादशी ।
हो गए मुनि निर्ग्रंथ, संयम रथ पर चढ़ गए ॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

प्रकटा रवि कैवल्य, पौष कृष्ण की दूज को ।
किया ज्ञानकल्याण, इन्द्र सुरों ने आन कर ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

पाया पद निर्वाण, फागुन शुक्ला पंचमी ।
हुआ मोक्षकल्याण, संवल कूट सुशिखर जी ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

जयमाला

(सोरठा)

मोह मल्ल जय हेतु, मल्लिनाथ मुनि हो गए ।
भव भावों से रीत, साक्षात शिव हो गए ॥

(ताटंक)

आठ दोष सम्यग्दर्शन के कभी न हों मेरे द्वारा ।
निःशंकित श्रद्धान हृदय हो तो कट जाये भवकारा ॥
निःकांक्षित भावना पूर्ण हो आकांक्षा का नाम नहीं ।
निर्वचिकित्सा भाव हृदय हो सेवा विरहित काम नहीं ॥
नहीं अमूढ़दृष्टि, मिथ्या जन की जु प्रशंसा करूँ नहीं ।
उपगूहन पर के दोषों को कभी प्रकाशित करूँ नहीं ॥
स्थितिकरण करूँ साधर्मी कभी मार्ग से डिगूँ नहीं ।
वत्सल भाव हृदय में धारूँ इससे पलभर चिगूँ नहीं ॥
धर्ममार्ग की कर प्रभावना सबका ही कल्याण करूँ ।
समकित के वसु गुण उर धारूँ प्रभु निज का उत्थान करूँ ॥
कभी किसी भी प्राणी का निन्दा पुराण मैं पढ़ूँ नहीं ।
अपनी ख्याति प्रशंसा का भी तो पुराण मैं गढ़ू नहीं ॥
दोनों कृत्य नीच गति दाता नर्क तिर्यंच कुगति के घर ।
विनय भाव गति उच्च प्रदाता कल्पादिक साता के घर ॥
अनियत कुल का गर्व न कर तू घृणा न कर छोटे कुल से ।
आगामी भव जुड़ सकता है तू भी छोटे ही कुल से ॥
कभी जाति का गर्व न करना तू निगोद से आया है ।
करके भूल पुनः निगोद जाने का भाव सुहाया है ॥
बल का गर्व किया रावण ने सप्तम नर्क दुक्ख पाया ।
मान कषायी होकर छोड़े प्राण विनय को बिसराया ॥

अगर ऋद्धि का मद है तो फिर द्वीपायन की देख दशा ।
क्रोधपूर्वक मरा स्वयं ही जाकर नरक कुधाम फँसा ॥
तप का मद भी दुखदायी है खोटी गति का करता बंध ।
रुद्र आदि की कथा बताती मुनि भी हो जाता है अंध ॥
राज्य आदि देह का मद भी नश्वर है दुखदायी है ।
नरकादिक गतियों का दाता प्रतिक्षण पीड़ादायी है ॥
पूजा का मद भूल बावरे मत घमंड कर पल भर भी ।
मरकर जाने कहाँ जाएगा सोचा है क्या क्षण भी ॥
नहीं ज्ञानमद करना पगले यह है ज्ञानभाव घातक ।
ये आठों मद ले जाते है इस मानव को नरकों तक ॥
षट् अनायतन से मैं दूर रहूँ ये अकल्याणकारी ।
मिथ्यादेव शास्त्र गुरु हैं तो ये हैं भव-भव दुखकारी ॥
देव मूढ़ता गुरु मूढ़ता लोक मूढ़ता तजूँ प्रभो ।
देखा देखी नहीं करूँ मैं नमन किसी को कभी विभो ॥
बिना परीक्षा देव मानना यह मिथ्या भ्रम वर्धक है ।
बिना परीक्षा गुरु की आज्ञा पालन भी दुख सर्जक है ॥
मल्लिनाथ के चरणाम्बुज की अनुकंपा से ज्ञान हुआ ।
आत्मतत्त्व की प्रतीति पूर्वक उर में दृढ़ श्रद्धान हुआ ॥
अब न कहीं कोई बाधक है सम्यग्दर्शन पाने में ।
होगी देर नहीं होगा अंधेर मोक्ष के जाने में ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

मल्लिनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊं ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

ॐ

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

चार घातिया कर्म नष्ट कर, मुनिसुव्रत प्रभु हुए जिनेश।
काम विकार नष्टकर नाशा, अहंकार का गर्व विशेष॥
कर्म रज रहित विरज आप को, लख होता विस्मय उत्पन्न।
भव की दशा विनाशी तुमने, सिद्ध दशा से हो सम्पन्न॥
पूर्ण अतीन्द्रिय सुख से युक्त, हुए प्रभु कर्म कलंक विहीन।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत जिनवर, भवसागर कर डाला क्षीण।
चंद्र किरण सम निर्मल श्वेत, रक्त से भूषित जिनवर देह।
परमौदारिक तन धारी प्रभु, अंतर में न किसी से नेह॥

(दोहा)

राजगृही में जन्म ले, किया आत्मकल्याण।
सम्मेदाचल शीश से, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(ताटंक)

धन का किया समादर जिसने, वह न कभी धन से ऊबा।
धन में तन्मय होकर निज को, भूला वह भवदधि डूबा॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुणसागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलंनि.।

अर्थातीत बना जो कोई, भव वासना विहीन हुआ।
निज भूतार्थ आश्रय पाकर, निज रस में तल्लीन हुआ॥

परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

आभिजात्य रत्नत्रय पाया, शुद्धज्ञान की कला मिली।
बंध कली शुद्धात्मतत्त्व की, निज उपवन की त्वरित खिली॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् नि.।

मूलभूत आनंद अनिन्द्रिय, जड़ इन्द्रिय से योजन दूर।
आत्मेन्द्रिय की पहुँच आत्मा, के भीतर है निकट अदूर॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

दुख का कम होना यदि सुख है, तो सुख किसी चिड़िया का नाम।
सुख तो निज आनंद सिंधु की, सहज तरंगों का ध्रुव-धाम॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

निज ध्रुवधाम आत्मा में है, जो खोजेगा पाएगा।
नहीं खोजनेवाला यों ही, भव वन में भरमाएगा॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

आत्मज्ञान के तल पर होती, आत्मध्यान की क्रान्ति महान।
इसी क्रान्ति से हो जाता है, सकल कर्म रज का अवसान॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

प्रज्ञावान शुद्ध आभा से, अभिमंडित हो जाता है ।
सादि अनंतानंत सुखों का, सागर उर लहराता है ॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ ।
जिन गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

रूपांतरित ध्यान में जो, असमर्थ वही करते दुर्ध्यान ।
धर्मध्यान जो नहीं जानते, कब कर सकते शुक्लध्यान ॥
शुक्लध्यान बिन कर्म नाश का, सकल यत्न भव वर्धक है।
एक मात्र यह शुक्लध्यान ही, मुक्ति प्राप्ति में सार्थक है ॥
अपने भीतर त्वरित विराजित, होने का कर लूं पुरुषार्थ ।
एक मात्र भूतार्थ सत्य, पुरुषार्थ यही समझूं परमार्थ ॥
परम भाव संपदा प्राप्ति हित, मुनिसुव्रत का ध्यान करूँ ।
निज गुण सागर में अवगाहन, कर निज का कल्याण करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

श्रावण कृष्णा दूज को, मना गर्भकल्याण ।
माँ सोमा उर अवतरे, राजागृही महान ॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

कृष्ण दशम वैशाख की, मना जन्म कल्याण ।
पिता सुमित्र महान ने, दिया किमिच्छिक दान ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

कृष्ण दशम वैशाख की, मना सुतपकल्याण ।
चंपक तरु तल ले लिया, पद निर्ग्रंथ प्रधान ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्याम् तपकल्याणप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

नवमी वदी वैशाख की, पाया केवलज्ञान।
समवशरण रचना हुई, मंगलमयी महान॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्याम् तप कल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

फागुन कृष्णा द्वादशी, पाया पद निर्वाण।
इन्द्रों ने हर्षित किया, महामोक्षकल्याण॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णदशम्याम् निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

मुनिसुव्रत जिन नाथ निश्चय व्रत के तुम धनी।
मुझे सुव्रत दो नाथ, भवपीड़ा मेरी हरो॥

(दिग्वधू)

रागादि भाव जबतक, तबतक ही भव दुख है।
भवदुख क्षय हो जाए, तो फिर सुख ही सुख है॥
भवदुख क्षय करने का, सम्यक् उपाय पावन।
सम्यग्दर्शन ही है, शिवपथ में मनभावन॥

अन्तर्मुख होते ही, सम्यग्दर्शन मिलता।
निज आत्म कमल सुन्दर, निज अंतर में खिलता॥
अन्तर्मन की पीड़ा, पल भर में क्षय होती।
चैतन्य आत्मा का, क्षण भर में जय होती॥

जय ध्वनि पूर्वक चेतन, शिवपुर में जाता है।
शिवपुर से यह न कभी, फिर वापस आता है॥
यह सादि अनंत सुखों, के सागर में बहता।
सिद्धत्व प्राप्त करके, अपने भीतर रहता॥

दुख की रजनी बीती, समकित के आने से।
शिव गंगोत्री पायी, निज में ही जाने से॥

शिवसुख की धूप खिली, निज को ही ध्याने से ।
फल मोक्ष सहज मिलता, रत्नत्रय पाने से ॥

हे मुनिसुव्रत जिनराज, निष्कंटक शिवपथ दो ।
शिवपथ को पार करूँ, ऐसा सम्यक् रथ दो ॥
अपनी स्वशक्तिसे ही, मैं शिवपुर जाऊँगा ।
भव वन में नाथ कभी, फिर लौट न आऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

मुनिसुव्रत प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र – ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।

卐

गीत

जो अपना ध्यान लगाएंगे वे महामोक्ष फल पाएंगे ।
जो पर का ध्यान लगाएंगे वे तो निगोद में जाएंगे ॥
जो निज का आश्रय लेते हैं वे शाश्वत सुख पद लेते हैं ।
जो पर का आश्रय लेते हैं वे चहुँगति के दुख लेते हैं ॥
जो निज स्वभाव को ध्याते हैं वे ही तो ध्रुव सुख पाते हैं।
जो पर के गीत सुनाते हैं वे सांसारिक दुख पाते हैं ॥
जो निज का चिन्तन करते हैं वे ही तो भव दुख हरते हैं ।
जो पर का चिन्तन करते हैं वे भव की यात्रा करते हैं ॥

श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना

(ताटंक)

नमि जिनवर स्वाधीन सौख्य के, स्वामी की संस्तुति पावन।
जब प्रशस्त परिणाम हृदय हो, तब संस्तुति हो मनभावन ॥
यह प्रशस्त परिणाम पुण्य का, श्रेयस बंध कराता है।
यह पुण्यानुबंधी पुण्य है, जिनपथ को दर्शाता है ॥
युक्त विशिष्ट बुद्धि से स्वामी, स्व-पर विवेक बुद्धि दाता ।
अंतरंग बहिरंग भावना, से वह पूर्ण बुद्धि पाता ॥
निज सार्वज्ञ्य लक्ष्मी से, शोभित हो आप हुए सर्वज्ञ ।
सरस्वती को उर धारण कर, आप हुए स्वामी आत्मज्ञ ॥

दोहा

जन्मे मिथलापुरी में, मति श्रुत अवधि सुयुक्त ।
गिरि सम्मेद शिखर चढ़े, तथा हो गए मुक्त ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(हो दीन बन्धु)

ज्ञान जल प्रवाह आज मुझको मिल गया।
भली भाँति हृदय कमल आज खिल गया ॥
शुद्ध सम्यक्त्व का नाम जब सुना।
मोह मिथ्यात्व आज पूरा गल गया ॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भोग वासना भी आज बंद हो गई।
कामना कषाय की भी मंद हो गई ॥
गंध आत्मा की आज शुद्ध मिली है।
स्वभाव भावना भी निर्द्वंद्व हो गई ॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

तीन चौकड़ी का नाश मैंने कर दिया।
शेष एक चौकड़ी को निर्बल कर दिया ॥
भवसमुद्र का किनारा आज मिला है।
शुद्ध अक्षती स्वरस को उर में भर लिया ॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

जो प्रमत्त भाव था वह भी तो उड़ गया।
कामवासना का भाव केतु मुड़ गया ॥
महाशील की महानता मुझे मिली।
मैं तो अपने शुद्धभाव से ही जुड़ गया ॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

वेदना क्षुधा की मेरी शान्त हो गई।
पाप बेल मंडप भी भ्रान्त हो गई ॥
भक्ष्य अरु अभक्ष्य का विवेक जगा है।
आत्मा अबंध निर्भ्रान्त हो गई ॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

स्वर्ग दीप ज्योति का प्रकाश अब नहीं।
मोह अंधकार में निवास अब नहीं॥
ज्ञान दीप ज्योति की प्रभा मुझे मिली।
घोर अज्ञान में स्ववास अब नहीं॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

धूप धर्म शुक्ल ध्यान निकट हो गई।
अष्ट कर्म बंध घड़ी विघट हो गई॥
राग द्वेष आग बुझी मन हुआ प्रशान्त।
शुद्ध ज्ञायक की प्रभा स्वघट हो गई॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

मोक्ष फल की प्राप्ति का उपाय मिल गया।
मोह राग वृक्ष पूर्ण जड़ से हिल गया॥
आत्मवृक्ष छाँव मेरे मन को भा गई।
भाव वासना स्वज्ञान उर में झिल गई॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

स्वर्ग सुख की कामना का अर्घ्य नहीं अब।
भव की झंझटों से आज मैं सुलझ गया॥
पद अनर्घ्य पाने में बाधा न कभी अब।
शेष संसार का भ्रमण न कहीं अब॥
परम सौख्य शाश्वत मुझे मिल गया।
कर्मबंध श्रृंखला न रही कहीं अब॥
पूज्य नमिनाथ के चरण पखार लूँ।
आत्मा की शक्तियों को मैं निहार लूँ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

हुआ गर्भकल्याण, आश्विन कृष्णा द्वितीया।
मिथिला पुरी महान, महादेवी उर अवतरे॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हुआ जन्मकल्याण, दशमी कृष्ण अषाढ़ को।
पुलकित हुए महान, विजयराज पितु हर्ष से॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

निश्चय संयम धार, मुनि निर्ग्रंथ हुए प्रभो।
पंचमहाव्रत युक्त, वदि अषाढ़ दशमी दिवस॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

मना ज्ञानकल्याण, मगसिर सुदी एकादशी।
आप हुए अरहंत, केवलज्ञान महान पा॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लाएकादश्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया पद निर्वाण, कूट मित्रधर शिखर जी।
चतुर्दशी वैशाख, कृष्ण पक्ष पावन दिवस॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

हे नमिनाथ जिनेश, वन्दनीय संसार से।
धारूँ जिन मुनिवेश, प्रभु छूटूँ भव भार से॥

(गीत)

आत्म अनुभूति का प्रकाश चाहिये।
निज आत्मा में ही निवास चाहिये॥

परानुभूति है तो घोर मिथ्यात्व है ।
पहिले मिथ्यात्व का विनाश चाहिये ॥
मिथ्यात्व नाश का उपाय एक है ।
भेदज्ञान शक्ति का विकास चाहिये ॥
सम्यक्त्व आत्मानुभूति बिन नहीं ।
अतः स्वात्मानुभूति पास चाहिये ॥
आत्मानुभूति जिस जीव को हुई ।
धीरे धीरे उसे मुक्ताकाश चाहिये ॥
नमि जिनवर उपदेश है यही ।
उनकी ही भाँति अनुभूति चाहिये ॥
आत्म अनुभव का महान महत्त्व है ।
आत्म अनुभव ही सहज सम्यक्त्व है ॥
आत्म अनुभव सहज सम्यग्ज्ञान है ।
आत्म अनुभव ही चरित्र प्रधान है ॥
आत्म अनुभव मुक्तिपथ है अद्वितीय ।
आत्म अनुभव ही सतत सदा दर्शनीय ॥
आत्म अनुभव स्वयं मोक्ष स्वरूप है ।
आत्म अनुभव सर्वश्रेष्ठ अनूप है ॥
आत्म अनुभव शीघ्र करना चाहिये ।
कर्म बंधन सर्व हरना चाहिये ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

नमि जिनवर पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

ॐ

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

(ताटंक)

नेमिनाथ कल्याण पंच से, भूषित शान्त स्वरूप अभय ।
पंचेन्द्रिय विषयों से निस्पृह, शरणभूत है शान्ति निलय ॥
शुक्ल ध्यान रूपी ज्वाला में, कर्मरूप समिधाएँ होम ।
उर्जयंत रैवतक सुगिरि से, पाया सिद्धपुरी का व्योम ॥
जिनपद नख सत इन्द्र मुकुट से, शशि समान जगमग होते।
तुम तन नील जलद दल सम लख, इन्द्रादिक हर्षित होते ॥
धर्म अहिंसा बिन निर्ग्रंथ, दशा के कभी न संभव है ।
धर्म क्रिया में अणुभर भी, हिंसा तो सदा असंभव है ॥

(दोहा)

शौर्यपुरी में जन्म ले किया आत्मकल्याण ।
उर्जयंत गिरनार से, मुक्त हुए भगवान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(गजल)

बंध भावों का गरल ही सदा मुझको भाया ।
निर्जरा नीर आज तक कभी नहीं पाया ॥
क्षीरोदधि नीर से अभिषेक किया जिनवर का ।
शुद्ध आत्मा का स्वभावी स्वजल नहीं लाया ॥
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. ।

आस्रव बंध की दुर्गंध ही मुझे भायी ।
शुद्ध आत्मा की गंध आज तक नहीं पायी ।।
मलय चंदन से मैंने पूजा रची जिनवर की ।
शुद्ध शीतल बयार पास तक नहीं आयी ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

शुद्ध संवर का भाव आज तक नहीं जागा ।
आस्रव भाव का विभाव भी नहीं भागा ।।
इन कषायों की आग ने मुझे जलाया है ।
पूर्ण अक्षत स्वभाव में न मन कभी लागा ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

कर्म का क्रूर मार से हुआ सदा व्याकुल ।
दर्प कंदर्प ने मुझे किया सदा घायल ।।
शील निज आत्मा का मैंने तो नहीं देखा ।
इसलिए भ्रमता रहा ज्ञान पुष्प बिन घायल ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

रागिनी राग की भव कष्ट को बढ़ाती है।
क्षुधा की वेदना सदैव ही सताती है ।।
बुझी उदराग्नि नहीं रसमयी नैवेद्यों से ।
शुद्धभावों को हवा में यही उड़ाती है ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

मोह की नींद में सोकर के ज्ञान निज खोया ।
पुण्य पापों का दीप मैंने सर्वदा जोया ।।
मुक्ति का बीज मैंने आज तक नहीं देखा ।
राग-द्वेषों के संग निज को भूल कर सोया ।।

मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

गुनगुनी धूप ने ही मुझे मदहोश किया ।
पाप की क्रूर धूप ने मुझे बेहोश किया ।।
धर्म की शुद्धधूप के नहीं दर्शन पाये ।
कर्म के नाश का उपाय कभी भी न किया ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

राग के फल में तो संसार में ही भ्रमता रहा ।
पाप अरु पुण्य से संसार में ही जमता रहा ।।
मोक्ष तरु फल का बीज बो नहीं पाया अब तक ।
चारों गतियों के बीच सर्वदा ही थमता रहा ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अर्घ्य शुभ भाव के अच्छे लगे तो अपनाए ।
शुद्धभावों के अर्घ्य आज तक नहीं भाए ।।
क्रिया कान्डों में ही जीवन मेरा बीता स्वामी ।
शाश्वत पद अनर्घ्य के न गीत भी गाए ।।
आज अवसर मिला है मोक्षसौख्य पाने का ।
इसलिए गुण अनंत आपके मुझे भाए ।।
मेरे तो नेमिनाथ और नहीं है कोई ।
ज्ञान की ज्योति मैंने अपने हृदय में जोई ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरनेमिनाथजिनेन्द्रायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

कार्तिक शुक्ला षष्ठमी, शिव देवी उर आन।
नृपति समुद्रविजय हुए, पुलकित महामहान ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

श्रावण शुक्ला षष्ठमी, हुआ जन्मकल्याण।
शौर्यपुरी हर्षित हुई, गाए मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

श्रावण शुक्ला षष्ठमी, सहस्राम्रवन मध्य।
तप धारा गिरनार पर, आए सब ही भव्य॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, हुआ ज्ञानकल्याण।
नेमिनाथ ने पा लिया, स्व-पर प्रकाशक ज्ञान॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सप्तमि शुक्ल अषाढ़, की पाया पद निर्वाण।
उर्जयंत रैवत सुगिरि, हुआ मोक्षकल्याण॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

नेमिनाथ भगवान, मेरा कर दो काज अब।
नाशूं कर्म विहान, दे दो निज पद राज अब॥

(भुजंगी)

बिना राग कर्मो की चलती नहीं है।
पवन के बिना आग जलती नहीं है॥
कषायों की बस्ती विभावों से बनती।
स्वभावों में अणुभर भी पलती नहीं है॥

महामोह मिथ्यात्व जब क्षीण होता।
तो फिर आत्मा निज को छलती नहीं है॥
प्रचुर निर्जरा हो मगर हो अकामी।
स्वसंवर के बिन कर्म दलती नहीं है॥

शुभाशुभ भरी आस्रव की बदरिया।
बिना शुद्ध समकित के टलती नहीं है॥

उदासी हो भव तन व भोगों से कैसे ।
तुम्हें वासना रंच खलती नहीं है ॥
निजातम की महिमा न हो यदि हृदय में ।
तो शिवसुख की खेती भी फलती नहीं है ॥
स्वपर भेद-विज्ञान के बिन जरा भी ।
महामोक्ष की उम्र ढलती नहीं है ॥
कभी शुद्ध समकित के ही गीत गाने ।
तुम्हारी निजातम मचलती नहीं है ॥
ये हैं दोष अज्ञान के भाव का ही ।
तुम्हारी जरा सी भी गलती नहीं है ॥
अगर जाग जाओ तो हो निज सबेरा ।
अंधेरे की फिर कुछ भी चलती नहीं है ॥
स्वपरिणति को उर में विराजित किया तो ।
विभावों की बाती फिर बलती नहीं है ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

नेमिनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ॥

इत्याशीर्वाद:

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

ॐ

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

कमठ जीव का घोर भयंकर, जीता पल भर में उपसर्ग ।
तत्क्षण पाया पार्श्वनाथ ने, प्रभु अरहंत स्वपद अपवर्ग ॥
शुक्ल ध्यान की तीक्ष्ण धार से, मोहशत्रु का घात किया ।
अचिन्त्य वैभव अद्‌भुत विस्मय, जनक आपने सहज लिया॥

प्रभो मोक्षकल्याण प्राप्त जिस थल से करते हैं तत्काल ।
इन्द्र वज्र से चिह्नित करता, प्रभु चरणों का चिह्न विशाल ॥
वही तीर्थक्षेत्र कहलाता, वन्दनीय जो तीनों काल ।
समश्रेणी में नाथ विराजे, सिद्धपुरी के उत्कट भाल ॥

(दोहा)

काशी जन्म स्थान है, वाराणसी सचित्र ।
सम्मेदाचल मोक्ष भू, पावन परम पवित्र ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(विजया)

हवाएँ चलेंगी विभावों की तो फिर ।
स्वभावों का कैसे मिलेगा किनारा ॥
जहाँ राग द्वेषों की बस्ती बसी हो ।
वहाँ कैसे आएगी निज ज्ञान धारा ॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित ।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित ॥

श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

नहीं चंद्रिका ज्ञान की भी दिखेगी।
नहीं ज्ञान रवि का सुदर्शन मिलेगा ॥
पवन ज्ञान की यदि चली ना हृदय में।
नहीं आत्मा का कमल भी खिलेगा ॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित ॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

करो यत्न कितना भी पर में अरे तुम।
जरा सा भी तुमको नहीं लाभ होगा ॥
नहीं आत्मचर्चा भी होगी सुगंधित।
कषायों का सम्पूर्ण साम्राज्य होगा ॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित ॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

महामोक्ष पथ है परम सूक्ष्म सुन लो।
कभी भूल कर इससे पीछे न हटना ॥
तुम्हें स्वर्ग सुख कुछ दिवस को मिलेगा।
अगर तुमने छोड़ी नहीं पर की रटना ॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित ॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

कहीं कोई रागों का यदि गीत गाए।
तो पल भर भी उसको नहीं गुनगुनाना॥
स्व वीणा के तारों पे अपने स्वरों से।
सहज आत्मगीता सभी को सुनाना॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

सहज ज्ञान दीपावली जगमगाए।
यही श्रम तुम्हारा परम श्रेष्ठ होगा॥
जो पर के ही दीपक जलाओगे तुम तो।
तुम्हारा पतन भी महा नेष्ठ होगा॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

नगाड़े विभावों के सब तोड़ देना।
ये रागों की वंशी भी तुम छोड़ देना॥
अगर कर्म क्षय का सुनिश्चय किया है।
तो अपने को अपने से तुम जोड़ लेना॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।

परालंबी जीवन न जीना कभी भी।
सहज स्वावलंबन से जीना सदा ही॥

अगर मोक्ष पाने की इच्छा जगी है।
समल राग गाना नहीं तुम कदा ही॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

अपद छोड़ कर तुम स्वपद की सँवारो।
जिसे प्राप्त करना बहुत ही सरल है॥
अपद को भयंकर महादुष्ट जानो।
ये अमृत नहीं है हलाहल गरल है॥
तेरी आत्मा शुद्ध है बुद्ध है ध्रुव।
त्रिकाली यही है नहीं कुछ विरल है॥
अगर अपने भीतर तू जागे निमिष भर।
ये कल्याण तेरा सुनिश्चित विमल है॥
जहाँ ज्ञान धारा न होती तरंगित।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित॥
श्री पार्श्वप्रभु की शरण क्या करेगी।
अगर होगा चेतन का मन ही पराश्रित॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(दोहा)

माँ वामा उर अवतरे, पार्श्वनाथ भगवान।
कृष्ण दूज वैशाख को, गूँजे जय-जयगान॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष कृष्ण एकादशी, हुआ जन्म कल्याण।
अश्वसेन नृप हर्ष से, मुक्त हस्त दें दान॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पौष कृष्ण एकादशी, मना सुतप कल्याण।
निर्ग्रंथेश महान मुनि, हुए आप भगवान ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

उपसर्गों को जय किया ज्ञानकल्याण महान।
चैत्र कृष्ण की चतुर्थी, पाया केवलज्ञान ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, निज में कर विश्राम।
सुवर्ण भद्र सम्मेदगिरि, पाया निज ध्रुवधाम ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

पार्श्वनाथ भगवान, भव संकटहर्त्ता प्रभो।
हो जाऊँ भव पार, ऐसी उत्तम शक्ति दो ॥

(समान सवैया)

निज चंदन उपवन अब पाया तिलक लगाऊँ घिस-घिस प्रतिदिन।
समरस जल का पान करूँ मैं ज्ञानानुभूति करूँ मैं छिन-छिन ॥
सम्यग्दर्शन संग ले आऊँ सम्यग्ज्ञान सुपावन पाऊँ।
सम्यक् चारित्र की महिमा पा रत्नत्रय मैं पाऊँ धन-धन ॥
बीन-बीन भव कंटक फेंकूँ शिवपथ निर्मल त्वरित बनाऊँ।
मुक्तिमार्ग पूरा करके मैं मुक्तिभवन मैं जाऊँ तत्क्षण ॥

(सरसी)

हवा उड़ाकर मुझे ले गई जिनशासन की ओर।
मैंने पायी निमिष मात्र में जिन आगम की कोर ॥
स्व-पर भेदविज्ञान हो गया निज पुरुषार्थ जगा।
निज आत्मा का भान हो गया चिर मिथ्यात्व भगा ॥

काल अनंत बाद पायी है मैंने सम्यक् भोर ।
हवा उड़ाकर मुझे ले गई जिनशासन की ओर ।।
समरस की वर्षा ऋतु आयी चेतन हर्षाया ।
अपने संग अनुभव रस लायी निज उर सरसाया ।।

आज पा लिया मैंने स्वामी भवसागर का छोर ।
हवा उड़ाकर मुझे ले गई जिनशासन की ओर ।।
निज निश्चय भूतार्थ जगा है अभूतार्थ भागा ।
मैं तो अपने ध्रुव स्वभाव की सेवा में लागा ।।

मैंने पाया आज नाथ सम्यग्दर्शन का जोर ।
हवा उड़ाकर मुझे ले गई जिनशासन की ओर ।।
राग बाँसुरी के तोड़े स्वर छोड़े भाव अशुद्ध ।
पार्श्वनाथ स्वामी ने मुझको किया महान प्रबुद्ध ।।

निज परिणति ने मुझे जगाया सोते से झकझोर ।
हवा उड़ाकर मुझे ले गई जिनशासन की ओर ।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

पार्श्वनाथ प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ।।
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ।।

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः ।

卐

ॐ

श्री महावीर जिन पूजन

स्थापना

(वीरछंद)

महावीर प्रभु आत्मोत्पन्न, सौख्य के स्वामी श्री अरहंत ।
भव्यजनों के भय क्षयकर्त्ता, विभ्रमहर्त्ता महिमावंत ॥
है प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणों, से न विरोध अतः निर्दोष ।
त्रिकालवर्त्ती जीवों के हैं, परम हितैषी श्री जिनेश ॥
गुणरूपी आभूषण धारण, कर निज गुण प्रकाश करते ।
चंद्र किरण की सुन्दरता को, आत्मकान्ति द्वारा हरते ॥
अप्रतिबुद्ध जीव को स्वामी, आप बना देते प्रतिबुद्ध ।
उस प्राणी को मोक्ष श्री से, भूषित कर कर देते शुद्ध ॥

(दोहा)

कुन्डलपुर की भूमि पर, जन्मे श्री भगवान ।
पावापुर से मोक्ष पा, किया विश्वकल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

(चौपई-आंचलीबद्ध)

आत्मज्ञान जल कर ले पान । जन्म-मरणदुख को अवसान ।
जय जिनदेव परम प्रभु हो । जय जिननाथ महाविभु हो ॥
महावीर के सुन ले बोल । बंद कपाट हृदय के खोल ।
देखे नाथ परम सुख होय । पूजे नाथ महासुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. ।

आस्रव गंध विनाश समस्त । शिवपथ पाले अभी प्रशस्त ।
जय जिनदेव परम प्रभु हो । जय जिननाथ महाविभु हो ॥

महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षय निज स्वभाव शिवरूप। आत्मभान बिन है विद्रूप।
जय जिनदेव परम प्रभु हो। जय जिननाथ महाविभु हो॥
महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

पाले समकित पुष्प महान। कामभाव कर दे अवसान।
जय जिनदेव परम प्रभु हो। जय जिननाथ महाविभु हो॥
महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्रायं कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि.।

निजानंद रस चरु कर प्राप्त। निज शिवसुख उर होगा व्याप्त।
जय जिनदेव परम प्रभु हो। जय जिननाथ महाविभु हो॥
महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

दर्शनमोह नाश तत्काल। फिर समकित का दीप उजाल।
जय जिनदेव परम प्रभु हो। जय जिननाथ महाविभु हो॥
महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

शुक्ल ध्यान की लाऊँ धूप। नाशूँ अष्टकर्म अरिरूप।
जय जिनदेव परम प्रभु हो। जय जिननाथ महाविभु हो॥
महावीर के सुन ले बोल। बंद कपाट हृदय के खोल।
देखे नाथ परम सुख होय। पूजे नाथ महासुख होय॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि.।

महामोक्ष फल पाले आज । तू सशक्त है चेतनराज ।
जय जिनदेव परम प्रभु हो । जय जिननाथ महाविभु हो ॥
महावीर के सुन ले बोल । बंद कपाट हृदय के खोल ।
देखे नाथ परम सुख होय । पूजे नाथ महासुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

पद अर्घ्य अविलंब महान । पाऊँ वर्धमान भगवान ।
जय जिनदेव परम प्रभु हो । जय जिननाथ महाविभु हो ॥
महावीर के सुन ले बोल । बंद कपाट हृदय के खोल ।
देखे नाथ परम सुख होय । पूजे नाथ महासुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

(सोरठा)

षष्टमि शुक्ल अषाढ़, माँ त्रिशला उर अवतरे ।
तज पुष्पोत्तर यान, कुन्डलपुर में आ गए ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

वर्धमान का जन्म, चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी ।
दिया किमिच्छिक दान, नृप सिद्धार्थ महान ने ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

तप धारा परिपूर्ण, दशमी मगसिर कृष्ण को ।
लौकान्तिक पुलकित, हुए निर्ग्रंथेश हुए प्रभो ॥

ॐ ह्रीं मगसिरकृष्णादशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पाया केवलज्ञान शुक्ल, दशम वैशाख को ।
प्रभु का जय-जय गान, ऋजुकूला तट पर हुआ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

हुआ मोक्षकल्याण, कार्तिक कृष्ण अमावसी ।
पावापुरी महान, तीर्थ विश्व में हो गया ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. ।

जयमाला

(सोरठा)

वर्धमान भगवान, तीन लोक के नाथ तुम ।
होऊं आप समान, मुझको ले लो साथ तुम ॥

(रोला)

अन्तहीन दर्शन गुण प्रभु का प्रकट हो गया ।
अंतहीन विस्तार ज्ञान का स्वघट हो गया ॥
अंतहीन विस्तार वीर्य का निकट हो गया ।
अंतहीन विस्तार स्वसुख का प्रकट हो गया ॥

अंतहीन विस्तार अगुरुलघु का प्रकटाया ।
अंतहीन अवगाहन गुण तुमने प्रकटाया ॥
अंतहीन सूक्ष्मत्व स्वगुण उर में दर्शाया ।
अंतहीन अव्याबाधत्व स्वगुण प्रकटाया ॥

अंतहीन साम्राज्य अनंत गुणों को पाया ।
यही जानकर शरण आप की मैं अब आया ॥
अंतहीन शिवपुर के वासी जय हो जय हो ।
आप कृपा से मेरा भी भव संकट क्षय हो ॥

(गीत)

शुद्ध आत्मतत्व का ज्ञान चाहिये ।
शुद्ध आत्मतत्व का ध्यान चाहिये ॥
शुद्ध आत्मतत्व का भान चाहिये ।
शुद्ध आत्मा का बहुमान चाहिये ॥

अनादि काल से ही मैं निगोद में रहा ।
अनादि काल से ही मिथ्यात्व में बहा ॥
त्रस हुआ तो नर्क आदि कष्ट भी सहा ।
बार-बार स्वर्ग का महल बना रहा ॥

अब तो आत्मा का उद्धार चाहिये ।
आत्म तत्व का सदा विचार चाहिये ॥
आचरण ज्ञानमय सुधार चाहिये ।
आत्म अनुभव स्वरस की धार चाहिये ॥

शुद्ध आत्मा को सम्यक्त्व चाहिये ।
पूर्ण सावधान जीवत्व चाहिये ॥
पुरुषार्थ शक्ति भी महान चाहिए ।
एकमात्र पूर्ण निर्वाण चाहिये ॥

महावीर स्वामी मेरी विनय यही ।
भव क्षय हो के मिले मोक्ष की मही ॥
मुझे आप से न इन्द्र पद चाहिये ।
मात्र आप जैसा ही स्व पद चाहिये ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

महावीर प्रभु पूजन करके निज को ध्याऊँ ।
तुव समान निज पदवी पा उर में हर्षाऊँ ॥
लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का अंतरंग में लाऊँ ।
पूर्ण लक्ष्य जब तक न मिले तुमको ही ध्याऊँ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः ।

卐

हम तो निश्चय संयम पायो ।
बिन संयम चारों गतियों में बेर बेर भरमायो ।
समकित ज्ञान चरित्र सुनिश्चय पायो मन हरषायो ॥
निज परिणति संग नाच्यो अब मैं आनंदधन निज पायो ।
मोक्ष मार्ग सम्पूर्ण पार कर सिद्ध स्वपद दरशायो ॥

अंतिम महार्घ्य

(रोला)

वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर मैंने पूजे।
इस जगती में इन सम और नहीं हैं दूजे ॥
वीतराग अरहंत महाप्रभु जगहितकारी।
करते हैं कल्याण सभी का प्रभु अविकारी ॥
मुक्ति मार्ग संदेश प्रदायक ये ही तो हैं।
ज्ञान शरीरी निर्मल ज्ञायक ये ही तो हैं ॥
जन्म समय से तीन ज्ञान के ये धारी थे।
पूर्ण अनंतानंत अतुलबल के धारी थे ॥
भव अटवी की दशा देख वैराग्य समाया।
नग्न दिगंबर मुनि मुद्रा का मान बढाया ॥
परम तपस्या करके केवलज्ञान उपाया।
घाति नाश अरहंत स्वपद अपना प्रकटाया ॥
सकल जगत को दिव्यध्वनि का दान दे दिया।
एक मात्र शुद्धात्मतत्व का भान दे दिया ॥
स्वयं तरे औरों को तारा तुमने स्वामी।
लोकालोक प्रकाशक ज्ञायक अन्तर्यामी ॥
तुव गुण वर्णन करने की क्षमता न पास है।
मेरा तो स्वामी भव अटवी में निवास ह ॥
तुव पथ पर चलने की जागी आज कामना।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ जगी भावना ॥

(लोकगीत-झूला)

रत्नत्रय महिमा जब जागी हृदय में।
मोह मिथ्यात्व भाव घर से निकाले।
पड गये झूले गुणस्थान वाले ॥

मिथ्यात्व में ही अनादि से झूले ;
राग–द्वेष भावों में मत्त हो फूले ॥
पहिले से चौथे में आए अब चेतन ।
नीचे गिरेंगे कभी फिर न चेतन ॥
पंचम में आए फिर निज को सँभाले ।
पड़ गये झूले गुणस्थान वाले ॥
आए हैं शुद्धात्मा के निलय में ।
पूर्ण देशसंयम भी आया हृदय में ॥
षष्टम सप्तम में झूले निराले ।
पड़ गए झूले गुणस्थान वाले ॥
फिर श्रेणी चढ़ते हैं मुनिवर हमारे ।
अष्टम में झूलते ऋषिवर हमारे ॥
नवम दशम के खोलते हैं ताले ।
पड़ गए झूले गुणस्थान वाले ॥
उपशम श्रेणी पर जो भी हैं आते ।
ग्यारह से आगे नहीं जाने पाते ॥
ग्यारह से गिरते हैं कुछ मन के काले ।
पड़ गए झूले गुणस्थान वाले ॥
गिरकर फिर चढ़ते हैं शुक्ल ध्यान बल से ।
ग्यारह में जाते न क्षपक श्रेणी बल से ॥
बारह में झूलते मोह क्षीण वाले ।
पड गए झूले गुणस्थान वाले ॥
तेरह में झूलते अरहंत बनकर ।
स्व–पर प्रकाशक सर्वज्ञ बनकर ॥
सकल ज्ञेय ज्ञायक के ही भाव पाले ।
पड़ गए झूले गुण स्थान वाले ॥
चौदह में झूल फिर सिद्ध बन जाते ।
शाश्वत स्वपद मोक्ष तत्काल पाते ॥
आनंद अतीन्द्रीय पा भवदुक्ख टाले ।
अनुभव रस के घूँट अंतर में ढाले ॥
पड गए झूले गुणस्थान वाले ॥

(रोला)

महाअर्घ्य अर्पित करता हूँ विनय भाव से।
आप कृपा से जुड़ जाऊँ अपने स्वभाव से ॥
आत्मज्ञान रस मिला निज शुद्धभाव से।
सदा सदा को युक्त हुआ मैं तो स्वभाव से ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिकमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि. स्वाहा।

महाजयमाला

(चौपइ)

छह द्रव्यों को लूँ पहचान। अपना आत्म द्रव्यलूँ जान।
सात तत्त्व का स्वरूप जान। आत्मतत्त्व का हो श्रद्धान ॥
नौ पदार्थ का कर लूँ ज्ञान। निज पदार्थ का हो प्रभु भान।
पांचों अस्तिकाय लूँ जान। निज जीवास्तिकाय पहचान ॥

तीनों कालों को लूँ जान। अपना शुद्ध स्वकाल महान।
तीन लोक छह द्रव्यमयी। निजालोक स्वज्ञानमयी ॥
छह लेश्याएँ लूँ पहचान। मैं हूँ लेश्या रहित महान।
चारों गतियाँ चारकषाय। भव अटवी में अति दुखदाय ॥

राग-द्वेष भवबंध स्वरूप। हैं विभाव सारे दुखकूप।
मैं इन सबसे भिन्न महान। ध्रौव्य त्रिकाली श्रेष्ठ प्रधान ॥
ये सब धारूँ मन वच काय। ज्ञायक हो जाऊँ शिवदाय।
व्रत संयम सम्यक्त्व प्रधान। समित गुप्ति चारित्र महान ॥

षट् कायिक प्राणी सब जान। धरूँ अहिंसा महामहान।
तुव पथ पर ही चरण धरूँ। मुक्तिमार्ग का वरण करूँ ॥
करूँ आत्मकल्याण महान। पाऊँ प्रभु निज पद निर्वाण।
यही भावना जागी नाथ। आप कृपा से बनूँ स्वनाथ ॥

(ताटंक)

सर्व अभ्युदय मिल जाते हैं, केवल समकित पाने से।
आत्मतत्त्व से परिचय होता, सप्तम तत्त्व के ध्याने से ॥

पुण्य संपदा सम्यग्दृष्टि, के चरणों में आती है ।
पाप आपदा मिथ्यादृष्टी, के सिर पर मँडराती है ॥

गुण पूरित मुनिवर की शोभा, आत्मध्यान निज सर्वोत्तम ।
ज्ञान ध्यान ही है संसार, बेल क्षय करने में सक्षम ॥
मोह विजय कर आस्रव मुक्त, हुए मुनिवर निज हित के काज।
दर्शन ज्ञान समग्र भवोत्तारक, आनंदमयी मुनिराज ॥

मलिन चित्त हो तो बन जाता, स्वयं भूल से दोषावास ।
जो कषाय से विमुक्त होता, वह पाता है मुक्ताकाश ॥
यदि मिथ्यात्व सहित अविरति है, तो निश्चित खोटे परिणाम।
यदि मिथ्यात्व रहित अविरति है, तो मिलता स्वर्गों का धाम॥

कर्म नृपति है मोहनीय यह, इसके हैं अट्ठाईस भेद ।
शेष कर्म सब जय कर लेगा, यदि यह देगा पहिले छेद ॥

(ताटंक)

जिन भावना नहीं होगी तो, भव वासना रहेगी ही ।
जिन भावना रहित आत्मा, भवदधि कष्ट सहेगी ही ॥
बिन दर्शन विशुद्धि के कोई, भी व्रत होता कभी नहीं ।
भाव रहित जीवन जीनेवाला, सुख पाता कभी नहीं ॥

बिन सम्यग्दर्शन के मुनि भी, चलता फिरता मुरदा है ।
भव-भव तक अपूज्य रहता है, ऊपर झूठा परदा है ॥
कुनय कुशास्त्रों से मोहित, संसार भ्रमण ही करता है ।
कुत्सित ध्यानों में रत रह, पापों का संचय करता है ॥

धर्म अहिंसा बिना बिताया, तूने यदि सारा जीवन ।
मृत्यु समय का क्लेश सहन कर, नहीं सकेगा सुन चेतन ॥
निज कल्याण लाभ चाहे तो, धर्म अहिंसा पालन कर ।
हिंसा से यदि विरत न होगा तो पाएगा भव दुखकर ॥

भव अंकुर क्षय करना है तो, कर्म बीज सब कर दे दग्ध।
ज्ञान चेतना से अज्ञान, चेतना कर दे पूरी दग्ध ॥
एक यही उत्तम उपाय है, मोक्षमार्ग को पाने का।
एक मात्र सम्यक् प्रकार है, महामोक्ष फल पाने का ॥

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु ने, जो कुछ किया वही तू कर।
आत्म तत्त्व के दर्शन करके, सारे ही भव बंधन हर ॥

(दिग्पाल)

सारे जगत से उत्तम ज्ञानोपवन हमारा।
हम उसके हैं अनुगामी वह प्राण धन हमारा ॥
अज्ञान से है विरहित एकान्त से रहित है।
स्याद्‌वाद है सुपद्धति निज ज्ञान धन हमारा ॥

है भेद-ज्ञान भूषित उत्तम स्व-पर विवेकी।
समकित के बल से निर्मल उज्ज्वल सदन हमारा॥
हम इसकी प्राप्ति के हित पुरुषार्थ अब करेंगे।
पाकर रहेंगे इसको निश्चय सघन हमारा ॥

इसमें अनंत गुण के पुष्पों की क्यारियाँ हैं।
निर्बंध गंध भूषित आनंदघन हमारा ॥
कैवल्य रवि को पाकर होंगे हम पूर्ण ज्ञानी।
पाएँगें आत्मबल से सिद्धों की राजधानी ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिकमहावीरपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् नि.।

आशीर्वाद

(रोला)

इस विधान का फल हो स्वामी सम्यग्दर्शन।
सम्यग्ज्ञान सहित सम्यक् चारित्र सुपावन ॥
भाव भासना इस भव में हो जाए स्वामी।
मेरी विनय सुनो तीर्थंकर अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद:

समुच्चय महार्घ्य

(ताटंक)

श्री अरहंत देव को पूजूँ, श्री सिद्ध प्रभु को पूजूँ ।
आचार्यों को नमन करूँ मैं, उपाध्याय के पद पूजूँ ॥
सर्वसाधु चरणाम्बुज वन्दूँ, जिन चैत्यालय अभिनन्दूँ ।
श्री जिन प्रतिमाएं पूजन कर, जिनवाणी माँ को वन्दूँ ॥

श्री जिनधर्म परम मंगलमय, भाव सहित सादर वन्दूँ ।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्रों को अभिनन्दूँ ॥
सोलहकारण रत्नत्रय दशलक्षण धर्म सदा वन्दूँ ।
महार्घ्य में करूँ समर्पित, ध्रुव स्वभाव निज अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री तीनलोकसम्बन्धी श्री अरहतं, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनचैत्यालय, जिनबिम्ब, जिनधर्म तीर्थक्षेत्र निर्वाणक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र, सोलहकारणभावना, रत्नत्रय, दशलक्षण धर्म आदि अनर्घ्य पद प्राप्तये महार्घ्य नि.।

शान्तिपाठ

(गातिका)

चतुर्विंशति तीर्थंकर को, नमन है निज बार-बार ।
शान्ति सौख्य प्रदानकर्त्ता, गुण अनंत हृदय अपार ॥
परम शान्ति प्रदान कर दो, सुखी हो जाऊँ प्रभो ।
दूर सर्व अशान्ति हो अब, ज्ञानधन पाऊँ विभो ॥

हो अशान्ति नहीं जग में, जीव सारे हों सुखी ।
महा शान्ति अपार पाएँ, जीव फिर हो ना दुखी ॥
आत्म बोधि महान हे प्रभु, प्राप्त हो सबको सदा ।
शुद्ध आत्मसमाधि पाएँ, शान्ति हो उर सर्वदा ॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपामि ।

क्षमापना

(वीरछंद)

तुव पूजन में जो भी भूल हुई हों क्षमा करो भगवान।
आह्वानन सुस्थापन सन्निधिकरण क्रिया से मैं अनजान॥
परम क्षमा के स्रोत आप हैं, अतः क्षमा कर दो मम भूल।
आप कृपा से मैं प्रभु पाऊँ, उत्तम मोक्ष सौख्य का मूल॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

तीर्थयात्रा गीत

गगन मण्डल में उड़ जाऊं
तीन लोक के तीर्थ क्षेत्र सब वंदन कर आऊं॥ गगन...
प्रथम श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर मैं जाऊं।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर चरण पूज ध्याऊं॥ गगन...
अजित आदि श्री पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा गाऊं।
शाश्वत तीर्थराज के दर्शन करके हर्षाऊँ॥ गगन...
फिर मंदारगिरी पावपुर वासुपूज्य ध्याऊँ।
हुए पंच कल्याणक प्रभु के पूजन कर आऊँ॥ गगन ...
उर्जयंत गिरनार शिखर पर्वत पर फिर जाऊँ।
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र को वन्दूँ सुख पाऊँ॥ गगन...
फिर पावापुर महावीर निर्वाण पुरी जाऊँ।
जल मंदिर में चरण पूजकर नाचूं हर्षाऊँ॥ गगन...
फिर कैलाश शिखर अष्टापद आदिनाथ ध्याऊँ।
ऋषभदेव निर्वाण धरा पर शुद्ध भाव लाऊँ॥ गगन ...
पंच महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊँ।
सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी मैं हो जाऊं॥ गगन ...
लगे हाथ फिर पंचमेरु नन्दीश्वर हो जाऊं।
जान सकूँ तो यही भावना जाने की भाऊँ॥ गगन...
ऊर्ध्व मध्य पाताल लोक तक दर्शन कर आऊँ।
सर्व जिनालय जिनबिम्बों की शीष झुकाऊँ॥ गगन...
तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज कर आऊँ।
शुद्धातम से कर प्रतीति मैं समकित उपजाऊँ॥ गगन...
फिर रत्नत्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊँ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिव पद प्रगटाऊँ॥ गगन...

राजमल पवैया रचित शताधिक पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें

१. चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
२. तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र विधान
३. सम्मेद शिखर विधान
४. वृहद् इन्द्रध्वजमंडल विधान
५. शान्ति विधान
६. विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
७. चौसठ ऋद्धि विधान
८. पंचमेरु नंदीश्वर विधान
९. जिन गुण संपत्ति विधान
१०. तीर्थंकर महिमा विधान
११. याग मंडल विधान
१२. पंचपरमेष्ठी विधान
१३. पंच कल्याणक विधान
१४. कर्म दहन विधान
१५. लघु जिन सहस्रनाम विधान
१६. कल्पद्रुम विधान
१७. गणधर वलय ऋषिमंडल विधान
१८. जैन पुजांजलि
१९. तीर्थ क्षेत्र पुजांजलि
२०. श्रुत स्कंध विधान
२१. श्री जम्बूद्वीप विधान
२२. श्री चारित्र शुद्धि विधान
२३. श्री लिंग पाहुड
२४. श्री शील पाहुड
२५. समकित तरंग
२६. नित्यपाठ अपूर्व अवसर
२७. तीस चौबीसी विधान
२८. आदिनाथ भरत बाहुबलि विधान
२९. शांति कुन्थु अरनाथ विधान
३०. नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर
३१. गोम्मटेश्वर बाहुबलि
३२. भगवान महावीर
३३. जैन धर्म सार्व धर्म
३४. वीरों का धर्म
३५. श्री नन्दीश्वर विधान
३६. जीवन दान
३७. श्री पंचमेरु विधान
३८. तीनलोक तीर्थ यात्रा गीत
३९. भक्तामर विधान
४०. चतुर्विंशति स्तोत्र
४१. जिनेन्द्र चालीसा संग्रह
४२. चतुर्दश भक्ति
४३. जिन सहस्रनाम हिन्दी
४४. जिन वंदना
४५. सूत्र पाहुड विधान
४६. स्वरूप संबोधन विधान
४७. पंचास्तिकाय विधान
४८. श्री रत्नत्रय विधान
४९. परमब्रह्म
५०. सैतालीस शक्ति विधान
५१. कुन्दकुन्द महिमा
५२. श्री लिंग पाहुड विधान
५३. इन्द्रध्वज विधान
५४. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
५५. कुन्दकुन्द वचनामृत
५६. श्री कल्पद्रुम मंडल विधान
५७. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान
५८. श्री दसलक्षण विधान
५९. श्री प्रवचर सार विधान
६०. श्री नियमसार विधान
६१. श्री अष्टपाहुड विधान
६२. श्री समयसार विधान
६३. श्री रत्नकरंड श्रावकाचार
६४४. श्री परमात्म प्रकाश विधान
६५. श्री षटखंडागम सत्प्ररूपणा विधान
६६. कार्तिकेयानुप्रेक्षा विधान
६७. श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय विधान
६८. श्री योगसार विधान
६९. श्री द्रव्य संग्रह विधान
७०. श्री कसायपाहुड विधान
७१. समाधि शतक विधान
७२. श्री गोम्मटसार विधान
७३. श्री समयसार कलश विधान
७४. श्री पद्मनन्दि श्रावकाचार विधान
७५. श्री धर्मोपदेशामृत विधान
७६. तत्त्वानुशासन विधान
७७. श्री दानोपदेश विधान
७८. इष्टोपदेश विधान
७९. श्री तत्त्वज्ञान तंरगिणी विधान
८०. श्री श्रवण बेलगोला विधान
८१. श्री ज्ञानार्णव विधान
८२. श्री आत्मानुशासन विधान
८३. श्री सोलह कारण विधान
८४. श्री बारस अणुवेक्खा विधान
८५. श्री पंच बालयति विधान
८६. श्री नियमसार कलश विधान
८७. श्री तत्त्वार्थ सार विधान
८८. श्री सम्मेद शिखर अर्घ्यावलि
८९. श्री वृहत् स्वयंभू स्तोत्र विधान
९०. श्री लघु समयसार विधान
९१. श्री बोध पाहुड विधान
९२. श्री चारित्र पाहुड विधान
९३. श्री दर्शन पाहुड विधान
९४. श्री भाव पाहुड विधान
९५. श्री मोक्ष पाहुड विधान